जून-2014 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 1 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

जून-२०१४

कर पुकार मैं कहता हूँ
सुन लो मेरी बात
सत्यार्थ-शिक्षा अपना लो
सारी मानव जात

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ३०

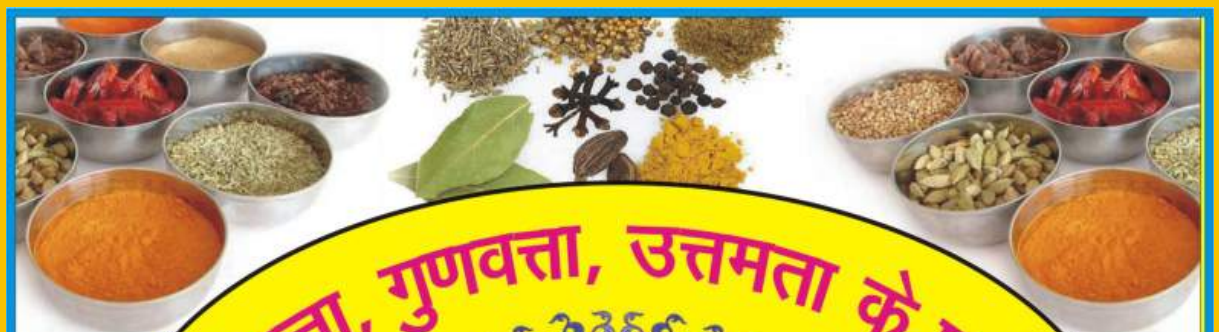

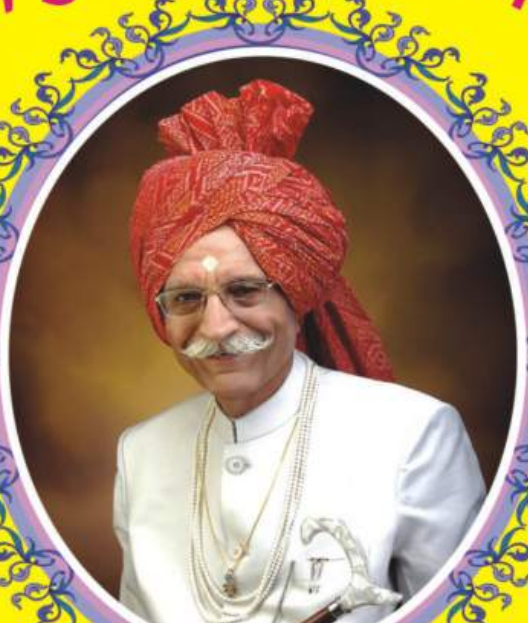

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
ज्येष्ठ शुक्ल नवमी
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

June - 2014

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २३

हलचल २४

०४	वेद सुधा
१२	अतुल्य ऋषि दयानन्द
१५	मानव मानवता भूल गया
१८	आचार्य प्रेमभिक्षु
१७	नन्हा कंकर उछाल देखो तो....
१७	हमारा प्यारा सत्यार्थप्रकाश
२१	सत्यार्थ प्रकाश का आठवाँ समुल्लास
२२	दौड़ें या चलें
२५	टी.वी.चैनलों की भीड़
२६	सत्यार्थप्रकाश पहेली-४
२७	अविद्या और विद्या
२८	स्ववर्णस्थ स्वयम्वर
३०	कथा सरित

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - १

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ९३१४५३५३७९, ९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

व्रतमय जीवन सीखो

ओ३म् इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निःशशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्।। ऋग्वेदः मण्डल १, सूक्त ८०, मंत्र १

आर्यों का जीवन व्रतमय होता है, वे व्रती होते हैं। मानवता के विकास के लिए जिन गुणों जैसे सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, ब्रह्मचर्य, तप, स्वाध्याय, परस्पर सहयोग, वात्सल्य, प्रेम आदि की आवश्यकता है, वे सब वे अपने जीवन में धारण कर लेते हैं। यजुर्वेद का प्रारम्भ भी सत्य को जीवन में धारण करने के व्रत से हुआ है।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि। -यजुर्वेद १.५

अर्थात्- (अग्ने) हे अग्निस्वरूप तेजस्वी प्रभो! (व्रतपते) आप सभी व्रतों के स्वामी हैं। सभी श्रेष्ठ गुण आप में ही आश्रय प्राप्त करते हैं। (व्रतम् चरिष्यामि) प्रभो। मैं भी एक व्रत धारण करने वाला हूँ। (तत्) उस (शकेयम्) व्रत का मैं पालन कर सकूँ (तत् मे राध्यताम्) मेरा यह व्रत सिद्ध हो, मैं इस व्रत का सदैव पालन कर सकूँ, कभी भी खण्डन मेरे द्वारा न हो। (अहम्) मैं (अनृतात) असत्य को छोड़कर (इदम्) इस (सत्यम्) सत्य को (उपैमि) धारण करता हूँ।

व्रत को धारण करने के पश्चात् निडर होकर उसे जीवन में धारण करते रहना है-

मा भेर्मा संविक्थाऽअतमेरुर्यज्ञोऽतमेरुर्यजमानस्य प्रजा भूयात् त्रिताय त्वा द्वितीय त्वैकताय त्वा। -यजुर्वेद १.२३

अर्थात्- (मा भेः) तू डर मत। अभय होकर रह। (मा संविक्थाः) तू उद्वेग से कम्पित मत हो। (यज्ञः) तेरा यज्ञ (अतमेरु) कभी श्रान्त होने वाला न हो, ग्लानि रहित श्रद्धावान् (प्रजा) सन्तान (भूयात्) तुझे प्राप्त हो। (त्वा) मैं तुझे (त्रिताय) ज्ञान, कर्म और उपासना के विस्तार के लिए प्रेरित करता हूँ। (द्वितीय त्वा) तुझे प्राप्त इन ज्ञान और कर्म का ही विस्तार करने के लिए कहता हूँ। (एकताय त्वा) मैं तुझे ज्ञान के विस्तार के लिए ही प्रेरित करता हूँ।

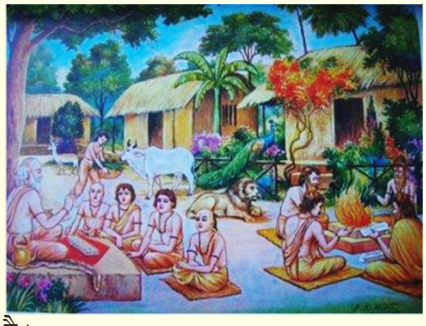

इस मंत्र में पहले ज्ञान कर्म और उपासना की प्रेरणा दी गई है और फिर इन तीनों में से भी ज्ञान और कर्म पर अधिक ध्यान देने को कहा गया है फिर इन ज्ञान और कर्म में भी ज्ञान की श्रेष्ठता होने के कारण ज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई है। वास्तव में संसार में ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ निधि है। सभी महापुरुषों एवं शास्त्रों का कथन भी यही है कि ज्ञान के अभाव में मुक्ति कभी भी सम्भव नहीं है। सांख्य में जिस ईश्वर के दर्शन के विषय में कहा गया है कि 'ईश्वरासिद्धेः' ईश्वर ज्ञानेन्द्रियों अथवा कर्मेन्द्रियों के द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता है उस ईश्वर का प्रत्यक्षीकरण भी ज्ञान के द्वारा संभव माना जाता है।

शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म माना गया है। यजुर्वेद में यज्ञ से मिलने वाले लाभों का वर्णन प्राप्त होता है।

वसो पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो धर्मोऽसि विश्वधाऽअसि
परमेण धाम्ना दृꣳहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्। -यजु. १.२

अर्थ- (वसो) यज्ञ से (पवित्र असि) तू पवित्र हुआ है। (द्यौः असि) तू प्रकाशमान जीवन वाला है। (पृथिवी असि) यज्ञ से तू अपनी शक्तियों का विस्तार करने वाला बना है। (मातरिश्वनः धर्मः असि) इस यज्ञ से तेरी प्राण शक्ति की वृद्धि हुई है। (विश्वधाः असि) यज्ञ से तू सबका धारण करने वाला बना है। (परमेण धाम्ना) उत्कृष्ट तेज से (दृꣳहस्व) तू अपने को दृढ़ बना। (मा ह्वार्षीः) अपने जीवन में तू कुटिल गतिवाला मत बन। (ते) तेरे विषय में (यज्ञपतिः) इस सृष्टि यज्ञ का स्वामी परमात्मा (मा ह्वार्षीत्) कठोर नीति का अवलम्बन न करे।

यज्ञ के जो लाभ बताये गये हैं उनका अर्थ है कि हम नित्य यज्ञ करने का व्रत लें। यज्ञ के साथ वेदाध्ययन का भी व्रत लिया जाना चाहिए।

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः।
इन्द्रस्य त्वा भागꣳसोमेनातनच्मि विष्णो हव्यꣳरक्ष। - यजु. १.४

अर्थ- हे (विष्णो) सर्वव्यापक प्रभो। आप जिस वेद वाणी का धारण करते हैं (सा) वह (विश्वायु) पूर्ण आयु देने वाली (सा) वह (विश्वकर्मा) सम्पूर्ण क्रिया काण्ड के पूर्ण करने वाली और (सा) वह (विश्व धाया:) सम्पूर्ण जगत् को धारण करने वाली है। इसी से मैं (इन्द्रस्य) परमेश्वर के (भागम्) सेवनीय यज्ञ को (सोमेन) आनन्द से (आतनच्मि) अपने हृदय में दृढ़ करता हूँ तथा हे परमेश्वर! (हव्यम्) यज्ञ सम्बन्धी द्रव्य अथवा विज्ञान की (रक्ष) सदा रक्षा कीजिये।

हमे शाकाहार का भी व्रत धारण करना चाहिए।

धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा।
दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः
प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि। -यजु. १.२०

अर्थ- जो (धान्यम्) यज्ञ से शुद्ध, सुख का हेतु, रोग का नाशक चावल, यव आदि अन्न तथा (पय:) जल (असि) है वह (देवान्) विद्वान् अथवा जीव और इन्द्रियों को (धिनुहि) तृप्त करता है। (त्वा) उसको (प्राणाय) अपने जीवन के लिए (त्वा) उसे (उदानाय) स्फूर्ति बल और पराक्रम के लिए, (त्वा) उसे (व्यानाय) सब शुभ गुण, शुभ कर्म अथवा विद्या के अंगों को फैलाने के लिए (दीर्घाम्) बहुत दिनों तक (प्रसितिम्) अत्युत्तम सुख बन्धन युक्त (आयुषे) पूर्ण आयु के भोगने के लिए (धाम्) धारण करता हूँ।

मनुष्य को एक परमात्मा के अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं करनी चाहिए। उपासना भी श्रद्धापूर्वक एवं नियमित करें। नित्य उपासना का भी व्रत लें।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः। - यजु. ३.६०

अर्थ- हम लोग (त्र्यम्बकम्) ऋग्यजुः सामः मन्त्रों द्वारा ज्ञान, कर्म और उपासना देने वाले परमात्मा का (यजामहे:) पूजन करते हैं,

निरन्तर स्तुति करते हैं। (सुगन्धिम्) वे प्रभु हमारे साथ उत्तम गन्ध सम्बन्ध रखने वाले हैं। (पुष्टि वर्धनम्) हमारी सृष्टि का वर्धन करने वाले हैं। (मृत्यो:) इस मरणधर्मा शरीर से (मुक्षीय) मैं इस प्रकार मुक्त हो जाऊँ (इव) जैसे पूर्ण परिपक्व हुआ (ऊर्वारुकम्) खीरा (बन्धनात्) बन्धन से मुक्त हो जाता है (माऽमृतात) मैं मोक्ष से छूटने वाला न होऊँ।

(त्र्यम्बकम्) ज्ञान, कर्म और उपासना के उपदेष्टा प्रभु की (यजामहे) हम उपासना करते हैं। (पतिवेदनम्) मुझे सच्चे रक्षक को प्राप्त कराने वाले हैं। (बन्धनान्) नाना प्रकार के आकर्षण एवं बाँधने वाले पितृगृह से कन्या जैसे शान्ति से जाती है (इव) जैसे कि (ऊर्वारुकम्) परिपक्व खीरा (खरबूजा) (बन्धनात्) बन्धन से अलग हो जाता है। (इत:) इस संसार के बन्धन से (मुक्षीय) मैं छूट जाऊँ। (माऽमृत:) इस संसार से परे उस प्रभु से कभी अलग न होऊँ।

यजुर्वेद हमें बार-बार व्रती बनने की शिक्षा देता है।

व्रतं कृणुत व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः।
दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसꣳसुतीर्था नोऽअसद्वशे।
ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा। - यजु. ४.११

अर्थ- हे मनुष्यों! (व्रतम् कृणुत) तुम व्रत करो। (व्रतम् कृणुत) व्रत करो। (ब्रह्म अग्नि:) प्रभु तुम्हें आगे ले चलने वाले हैं। (अग्नि:

यज्ञः) यह यज्ञ अग्रणी है। हमारी उन्नति का कारण है। ब्रह्मयज्ञ एवं देव यज्ञ करते हुए हम ध्यान रखें कि (वनस्पति) वनस्पति ही (यज्ञियः) यज्ञ के योग्य बनाने वाली है। हम सात्विक भोजन के द्वारा (देवी धियम्) दैवी सम्पत्ति का वर्धन करने वाली बुद्धि को (मनामहे) माँगते हैं। (समृडीकाम्) जो उत्तम सुखों को देने वाली है। (अभिष्टये) यह सब इष्टों को प्राप्त कराने वाली है (वर्चोधाम) यह हमें अपवित्र भोग मार्ग से बचाती है (यज्ञवाहसम्) यज्ञों को प्राप्त कराने वाली है (सुतीर्था) उत्तम तीर्थ है। (नः) हमारी (वशे) इच्छा से (असत्) रहे। (ये) जो (देवाः) देव (मनोजाताः) ज्ञान से विकास को प्राप्त हुए हैं, (मनोयुजाः) जो औरों को भी ज्ञान से जोड़ते हैं। (चाक्षुक्रतवः) शरीर व आत्मा के बल तथा प्रज्ञा व यज्ञ (क्रतु) से युक्त हैं, (ते) वे (देव, नः) देव हमें (अवन्तु) रक्षित करके (नोअवन्तुः) वे हमें रोगों से भी बचाएँ। (तेभ्यः स्वाहा) इन देवों के लिए हम अपने को समर्पित करते हैं। परमात्मा हमें व्रत के बन्धन में बाँधकर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाता है।

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳश्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम। - यजु. १२.१२

अर्थ- (वरुण) हे व्रतों के बन्धन में बाँधकर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले प्रभो! (उत्तमम् पाशम्उत्) हमारे उत्तम बन्धन को हमसे बाहर कीजिए। (अस्मत्) इससे (अधमम्) नित्कृष्ट पाश को (अवश्रथाय) दूर करके ढीला कर दीजिए। हे वरुण। आप कृपा करके (मध्यमम्) रजो गुण युक्त बन्धन को भी (विश्रथाय) ढीला कर दिजिए। (अथ) अब तीनों बन्धनों को ढीला करके (वयम्) हम, हे (आदित्य) सूर्य (परमात्मा) (तव व्रते) तेरे व्रत में (अनागस) निष्पाप होकर (अदितये) पूर्ण स्वास्थ्य के लिए और अन्त में मोक्ष के लिए (स्याम्) होवें।

यजुर्वेद व्रतों का लाभ बताते हुए कहता हैः-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते। - यजु. १९.३०

अर्थ- (व्रतेन) व्रत के द्वारा (दीक्षाम्) दीक्षा को (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दीक्षया) दीक्षा द्वारा (दक्षिणाम्) दक्षिणा को (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दक्षिणा) दक्षिणा द्वारा (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त करता है (श्रद्धायाम्) श्रद्धा द्वारा (सत्यम्) सत्य को (आप्नोति) प्राप्त करता है।

भावार्थ- व्रत अर्थात् ब्रह्मचर्यादि नियमों से व्यक्ति सत्कर्मों का आरम्भ रूप दीक्षा, दक्षिता, कुशलता को प्राप्त करता है। कार्य कुशलता से दक्षिणा अर्थात् प्रतिष्ठा एवं धन प्राप्त होता है। प्रतिष्ठा और धन के प्राप्त हो जाने से नियमों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है। यह श्रद्धा ही सत्य को प्राप्त करने का मुख्य साधन है। इसलिए हमें व्रती बनना चाहिए। इति।

- शिव नारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर पेटअप "५.६x९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्

- न्यास द्वारा ONLINE TEST प्रारम्भ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से इस ONLINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

मानवता के हित अर्पित,
हों जिसके सारे काम।
वही पूज्य होता है जग में,
जपते हैं सब उसका नाम॥

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

आत्म निवेदन

अच्छे दिन आने वाले हैं।...

देश का राजनीतिक परिदृश्य, राजनीतिक दलों के चरित्र, उनकी चाल-ढाल, उनके क्रियाकलाप, किए हुए ऐसे वायदे जिन पर उन्हें कभी अमल करना ही नहीं था ने बीसियों सालों से मतदान प्रक्रिया को कम से कम मेरे लिए महज औपचारिक बना दिया था। कुछ समय पूर्व कुछ लोगों ने सच्चाई और ईमानदारी के नाम पर राजनीति में जबरदस्त हलचल उत्पन्न की। चौंककर लोगों ने उनकी ओर देखा। आशा भी लगाई, समर्थन भी दिया। परन्तु अतिमहत्त्वाकांक्षा के चलते वे पानी का बुलबुला ही सिद्ध हुए। परन्तु इस बार के लोकसभा चुनावों में ऐसा नहीं था। एक जननायक का ऐतिहासिक उदय राष्ट्रीय क्षितिज पर हुआ। उसके पास कोरी लफ्फाजी नहीं थी। उसने राज्य के स्तर पर अपने को सिद्ध किया था। सबसे बड़ी बात राजनेताओं के ऊबाऊ भाषणों और खोखले वायदों/दावों वाले वक्तव्यों के चलते उन्हें सुनने की तीव्र अनिच्छा रखने वाले मेरे जैसे अनेक व्यक्तियों को उन्होंने उन्हें सुनने को मजबूर कर दिया। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में संभवतः सबसे लम्बे चुनावों में इनके भाषणों को निरन्तर सुनते-सुनते, इनके आत्मविश्वास से लबरेज साक्षात्कार देखते-देखते, सोशल मीडिया, टेलीविजन, एफ. एम.रेडियो पर 'अबकी बार मोदी सरकार', 'अच्छे दिन आने वाले हैं' सैंकड़ों हजारों बार सुन-सुनकर भी न जाने क्यों बोरियत नहीं हुई बल्कि दिल-दिमाग ने उनके 'दिल माँगे मोर' से तारतम्य स्थापित कर लिया। ऐसा क्योंकर हुआ? मुझे ऐसा लगता है कि अपनी बात कहते समय मोदी जी की स्पष्टता, आँखों में झलकती सच्चाई तथा ईमानदारी और आत्मविश्वास ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया। हमारे देश में सम्पादक वर्ग बुद्धिजीवी कहलाता है। मुझे लगता है कि इनकी जमात में वही शामिल हो सकता है जो अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए बनाई गई 'साम्प्रदायिकता' तथा धर्म-निरपेक्षता ' की छद्म परिभाषा की वकालत करता हो। इस कीमत पर अपने को बुद्धिजीवी साबित करने हेतु इस जमात का सदस्य बनना मुझे कभी स्वीकार्य नहीं रहा। अतः Exit poll से लेकर १५ मई तक टीवी चैनलों पर चल रही चर्चा विशेष आकर्षण का विषय मेरे निकट नहीं बन सकी। वहाँ पूर्वाग्रह साफ नजर आ रहे थे।

निर्वाचन-परिणामों ने सभी पूर्वानुमानों को ध्वस्त कर दिया। मैं चुनाव-विश्लेषक तो नहीं पर मुझे

लगता है इस ऐतिहासिक जीत के कई कारण रहे। उत्तरप्रदेश तथा बिहार जैसे बड़े राज्यों में जहाँ जातिगत समीकरण राजनीति को जटिल बना देते हैं वे समीकरण भी ध्वस्त हुए। १० से लेकर १२ प्रतिशत जो अधिक वोटिंग हुई वह मोदी से देश की जनता की आशाओं का प्रतिबिम्ब है जिसने उनकी उदासीनता को भंग किया। एक और प्रमुख कारण युवा वोटर की सक्रियता जिसने निर्विवाद रूप से मोदी में इच्छाओं की पूर्ति का माद्दा देखा। इस सबसे बढ़कर २०१४ के चुनावों में प्रधानमंत्री के पद के जितने दावेदार थे जब उनका तुलनात्मक विश्लेषण किया जाय तो वे मोदी के पास भी खड़े नहीं दिखते। जनता मनमोहन जी का १० वर्षीय कार्यकाल देख ही चुकी थी जिसके खिलाफ गहरा आक्रोश था। कांग्रेस पार्टी का मात्र ४४ सीटों पर सिमट जाना इसका प्रमाण है। मोदी ने अपने चुनावी अभियान में तीन लाख कि.मी.की यात्रा की, सहस्रों रैलियों को सम्बोधित किया, नई तकनीक 3D होलोग्राम का उपयोग कर लाखों करोड़ों लोगों को सम्बोधित किया। कहते हैं कि यह विश्व रिकार्ड बन गया है। यह सत्य है कि ऐसा लगता था कि नरेन्द्र मोदी ऊर्जा का अजस्र स्रोत हैं। थकान उनके चेहरे पर दिखी नहीं। खास बात यह है कि अपनी ओर से चलाकर नरेन्द्र मोदी ने अपने उद्बोधनों को जातिवादी व साम्प्रदायिक सोच से मुक्त रखा। विकास व सुशासन उनके भाषणों के केन्द्र में रहा। परिणामों में स्पष्ट परिलक्षित हुआ है कि जनता ने उनकी बातों पर भरोसा किया है कि 'अच्छे दिन आने वाले हैं।' आजादी के बाद भारतवर्ष में जिस तरह का राजनीतिक वातावरण बना दिया गया उसमें अल्पसंख्यकचाद व जातिवाद रूपी विष ने लोकतंत्र को विनष्ट जैसा कर दिया था। परन्तु १६ वीं लोकसभा में मोदी जी की जीत में ऐसे सभी विनाशक तत्व पराभूत हुए विश्लेषण से यह साफ है।

तो भारत को एक ईमानदार, ऊर्जावान, विचारवान, राष्ट्रभक्त प्रधानमंत्री मिल गया। परन्तु मोदी जी की सबसे बड़ी समस्या यह रहेगी कि वे जनता की असीम आकांक्षाओं के रथ पर सवार होकर आए हैं। उनसे जादू की आशा की जावेगी जबकि असल जिन्दगी में जादू होते नहीं। अतः मोदी को प्रथम दिन से ही यह पारदर्शिता के साथ दिखाना होगा कि अच्छे दिनों की शुरूआत हो चुकी है। उन्हें दिखाना होगा कि अगर वे भ्रष्ट राजनीतिक परिदृश्य में अलग हैं, तो किस प्रकार?

मेरा अपना विचार है कि उनके क्रियाकलापों की आधार रेखा उन्हीं के वक्तव्यों में देखी जा सकती है। उनके उद्बोधनों की जिन पंक्तियों ने मुझे प्रभावित किया वे इस प्रकार हैं:-

१. न मैं किसी की टोपी पहनता हूँ न किसी को पहनाता हूँ। और किसी की टोपी किसी को उछालने भी नहीं दूँगा। मैं अपनी परम्पराओं का पालन करता हूँ, दूसरों की परम्पराओं का सम्मान करता हूँ।

२. न मैं आँख दिखाने में विश्वास रखता हूँ, न आँख झुकाकर बात करने में। मैं आँख मिलाकर बात करने में विश्वास रखता हूँ।

३.कुछ लोगों को तो मुझसे डरना पड़ेगा। जो भ्रष्टाचारी हैं, जो बेइमान हैं.....।

४.कानून अपना कार्य करेगा। बदले की भावना से कोई कार्यवाही नहीं की जावेगी।

५.मैं चाहता हूँ कि जितने भी सांसद हैं, Fast track court द्वारा एक वर्ष के अंदर उन पर निर्णय आवे।

६. जो मुझसे दूर हैं वे भी जब मोदी को जानेंगे तो प्यार करने लग जावेंगे।

७. चुनाव प्रचार समाप्ति पर दिया गया मोदी जी का सन्देश एक ऐसे नेता के व्यक्तित्व को निरूपित करता है जो भारत जैसे विविध पृष्ठभूमि वाले

नागरिकों के राष्ट्र के प्रमुख के रूप में उन्हें सक्षम स्वरूप में स्थापित करता है- इस संदेश की रेखांकित पंक्ति है..'अब राजनीति के ऊपर जनता, निराशा के ऊपर आशा, बहिष्करण के ऊपर समावेशन और विभेद के ऊपर विकास को तरजीह देने की जरूरत है।'

१६ मई की ऐतिहासिक विजय के पश्चात् बड़ौदा रैली में १७ मई को मोदी जी ने जो कहा उसमें से दो बिन्दु उद्धृत करना चाहूँगा- 'सबका साथ-सबका विकास' तथा 'यह सरकार सवा सौ करोड़ देशवासियों की है।' यह सब इस जननायक की मनःस्थिति को दर्शाता है कि उनका दायित्व केवल उन तक सीमित नहीं है जिन्होंने उन्हें वोट दिए वरन् उन सब तक विस्तरित है जिन्होंने उनको मत नहीं दिए वरन् उन तक भी जो उनके घोर विरोध में खड़े हैं। यही एक जननायक की spirit होती है।

मोदी जी अपार उम्मीदों की लहर पर सवार होकर आए हैं अतः उनके ताज को काँटों का ताज भी कहा जा सकता है। राज्य का प्राथमिक दायित्व देश की आन्तरिक तथा बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा है। राज्य नामक संस्था का जन्म भी इसी हेतु से हुआ है। अतएव सर्वप्रथम इसे सुनिश्चित करना मोदी सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। जन कल्याणकारी राज्य का नम्बर अब आता है। भ्रष्टाचार पर प्रहार तो तुरन्त ही दिख जाना चाहिए। लोकपाल, आर.टी.आई. व्हिसिल ब्लोअर जैसे उपयोगी यन्त्रों को बल प्रदान करना चाहिए। मोदी जी ने एक बात कही थी, जो आज तक किसी नेता ने नहीं कहीं, वह यह कि 'सांसदों के ऊपर जो मुकदमे लम्बित हैं उन पर निर्णय, फास्ट ट्रेक न्यायालयों के माध्यम से एक वर्ष में लाया जावेगा।' यह आसान नहीं है क्योंकि इस कार्य में निष्पक्ष होना होगा। अनेक दबाव आयेंगे, आलोचना होगी, पर मोदी जी यह कर सकते हैं। केवल यह एक कार्य ही उन्हें अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रधानमंत्री की श्रेणी में ला खड़ा करेगा। तभी अच्छे दिन आने की शुरूआत होगी और शायद देश की जनता यह भी कहने लगे- 'हर बार मोदी सरकार'।

ज्यातिषियों के दावे निकले गलत

पिछले वर्षों में फलित ज्योतिष के महारथियों की भविष्यवाणियों क्योंकि अधिकांशतः गलत साबित हुयी अतः उन्होंने भविष्यवाणी करने से परहेज शुरू कर दिया। चुनावों के दौरान हम दिलचस्पी के साथ ऐसी भविष्यवाणियों की प्रतीक्षा करते रहे। तभी ऐसी भविष्यवाणी आयी जिसमें कहा गया कि कांग्रेस और भाजपा दोनों पर साढे साती लगी है अतः दोनों की राह कठिन है।(न्यूज हंट)

चुनाव परिणाम से १-३ दिन पूर्व एक टी.वी. चैनल ५ प्रसिद्ध ज्योतिषियों को लेकर आए। उनमें से तीन ने स्पष्ट तौर पर मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने की संभावना को नगण्य बताया तथा कहा कि कोई महिला प्रधानमंत्री बनेगी।

वास्तव में क्या परिणाम रहा यह देश वासियों के समक्ष है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने फलित ज्योतिष को असत्य कहा। क्या अब गलत भविष्यवाणी करने वाले इस अविद्या को छोड़ेगें ? और हम इनके चंगुल में फँसना।

-अशोक आर्य

अशोक आर्य
०९००१३३९८३६, ०९३१४२३५१०१

पर्यावरण के बारे में सोचें

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष

आकांक्षा यादव

मनुष्य और पर्यावरण का संबंध काफी पुराना और गहरा है। पर्यावरण के बिना जीवन ही संभव नहीं है। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित पंचतत्व क्षिति, जल, पावक, गगन एवं समीर मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। ये तत्व आवश्यकतानुसार समस्त जीवों के उपयोग उपभोग में अपनी भूमिका निभाते हैं। मानव अपनी आकांक्षाओं के लिए इन तत्वों पर निर्भर हैं। इनका एक निश्चित तारतम्य जीवन को नए प्रतिमान देता है, पर जब किन्हीं कारणों से इनका सन्तुलन बिगड़ता है तो पर्यावरण सन्तुलन भी बिगड़ता है, जो अन्ततः न सिर्फ मानव बल्कि सभ्यताओं को प्रभावित करता है। ऐसे में जरूरत है कि इनका दोहन नहीं बल्कि सतत् विकास द्वारा संवेदनशील उपयोग किया जाए।

पर्यावरण के प्रति बढ़ती असंवेदनशीलता आज भयावह परिणाम उत्पन्न कर रही है। एक तरफ बढ़ती जनसंख्या, उस पर से प्रकृति का अनुचित दोहन, वाकई यह संक्रमणकालीन दौर है। यदि हम अभी भी नहीं चेते तो सभ्यताओं के अवसान में देरी नहीं लगेगी। वैश्विक स्तर पर देखें तो धरती का मात्र ३१ प्रतिशत क्षेत्र वनों से आच्छादित है, जबकि ३६ करोड़ एकड़ वन क्षेत्र प्रतिवर्ष घट रहा है। नतीजतन ११४१ प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। वहीं जंगलों पर निर्भर १.६ अरब लोगों की आजीविका खतरे में है।

बढ़ते पर्यावरण-प्रदूषण ने जल-थल-नभ किसी को भी नहीं छोड़ा है। पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा जलमग्न है, जिसमें करीब ०.३ फीसदी में से भी मात्र ३० फीसदी जल ही पीने योग्य बचा है। तभी तो ११० करोड़ लोगों को दुनिया में पीने के लिए साफ पानी तक नहीं मिलता। नतीजन, दुनिया में प्रतिवर्ष १८ लाख बच्चे पानी की कमी और बीमारियों के कारण दम तोड़ देते हैं। वहीं प्रतिवर्ष २२ लाख लोग जल जनित बीमारियों के चलते मौत के मुँह में समा जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक २०२५ तक २.६ अरब अतिरिक्त लोग जल आपूर्ति के संकट में इजाफा ही करेंगे।

यदि भारतीय परिप्रेक्ष्य में बात करें तो जिस गंगा नदी को जीवनदायिनी माना जाता है, उसमें १ अरब लीटर सीवेज मिलता है। ऐसे में स्वाभाविक है कि गंगा में बैक्टीरिया का स्तर २८०० गुना बढ़ गया है। इसी प्रकार यमुना नदी की बात करें तो अकेले राजधानी दिल्ली का ५७ फीसदी कचरा यमुना में डाला जाता है। यहाँ ३०५३ मिलियन लीटर सीवेज पानी यमुना में हर रोज बहाया जाता है। कहना गलत न होगा कि ८० फीसदी यमुना दिल्ली में ही प्रदूषित होती है।

सिर्फ जल क्यों जिस वायु में हम साँस लेते हैं, वह भी प्रदूषण से ग्रस्त है। पिछले पाँच सालों में वायु में ८-१० फीसदी कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ी है, नतीजन ५ करोड़ बच्चे हर समय वायु प्रदूषण से बीमार होते हैं। अकेले एशिया में ५३ लाख लोग प्रदूषित वायु के चलते मौत के मुँह में चले जाते हैं। हाल ही में अमेरिका के येल और कोलंबिया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की ओर से १३२ देशों में कराए गए वायु गुणवत्ता अध्ययन की मानें तो वायु प्रदूषण के मामले में भारत आखिरी दस देशों में शामिल है। १३२ देशों में भारत को १२५ वाँ स्थान मिला है, जबकि चीन को ११६ वाँ।

एक तरफ बढ़ती जनसंख्या, दूसरी तरफ बढ़ता पर्यावरण-प्रदूषण, ऐसे में उनके बीच परस्पर सन्तुलन की शीघ्र आवश्यकता है। मानव और पर्यावरण के मध्य असन्तुलन से जहाँ अन्य जीव-जन्तुओं व वनस्पतियों की प्रजातियाँ नष्ट होने के कगार पर हैं, वहीं ग्रीन हाउस के बढ़ते उत्सर्जन व ग्लोबल वार्मिंग से स्वच्छ साँस तक लेना मुश्किल हो गया है। मानवीय जीवन में बढ़ती भौतिकता एवं प्रकृति व पर्यावरण के प्रति बढ़ती उदासीनता, लापरवाही, बेपरवाही व दोहन ने विनाश लीला का ताण्डव आरम्भ कर दिया है। पृथ्वी पर बढ़ते तापमान के चलते जलवायु परिवर्तन भी हो रहा है। एक वैज्ञानिक रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन से हर वर्ष लगभग तीन लाख लोग मर रहे हैं, जिनमें से अधिकतर विकासशील देशों के हैं। ग्लोबल ह्यूमेनिटेरियन फोरम की एक रिपोर्ट के अनुसार १९०६ से

२००५ के मध्य में पृथ्वी का तापमान ०.७४ डिग्री सेल्सियस बढ़ा है और हाल के वर्षों में इसमें उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है। वर्ष २१०० तक यह तापमान न्यूनतम दो डिग्री सेल्सियस बढ़ने के आसार हैं।'

संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक २०३० तक वैश्विक ऊर्जा की जरूरत में ६० फीसदी की वृद्धि होगी। ऐसे में निर्वहनीय विकास के लिए तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

कोयला और पेट्रोल के अधिकाधिक उपयोग से वायुमंडल में कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है, जिससे पृथ्वी के औसत तापमान में भी वृद्धि हो रही है। वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी के सन्तुलित तापमान के लिए वायुमंडल में कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा ०.३ फीसदी रहना जरूरी है। इसमें असन्तुलन भयावह स्थिति पैदा कर सकता है। ओजोन परत जहाँ पराबैंगनी किरणों से धरा की रक्षा करती है, वहीं नित-प्रतिदिन बढ़ते एयर कंडीशनर व रेफ्रीजरेटर एवं प्लास्टिक उद्योग में उपयोग किए जाने वाले क्लोरोफ्लोरो कार्बन के उत्सर्जन से ओजोन परत को नुकसान पहुँच रहा है। इससे जहाँ पराबैंगनी किरणों के प्रवाह के चलते त्वचा कैंसर जैसी बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं, वहीं ग्लेशियरों के पिघलने के चलते तमाम द्वीपों व देशों पर खतरा मंडरा रहा है। आर्कटिक क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन पर २००४ में प्रकाशित एक अध्ययन रिपोर्ट में दावा किया गया है कि आर्कटिक क्षेत्र में विश्व के अन्य भागों की अपेक्षा तापमान वृद्धि दुगनी गति से हो रहा है। वस्तुतः आर्कटिक क्षेत्र में बर्फीली सतहें अधिक कारगर ढंग से सूर्य उष्मा का परिवर्तन करती हैं, पर अब तापमान बढ़ने एवं हिमखण्डों के तीव्रता से पिघलने के कारण अनाच्छादित भूक्षेत्र व सागर तल द्वारा अपेक्षाकृत अत्यधिक ऊष्मा ग्रहण की जा रही है, जिससे यह क्षेत्र अत्यन्त तीव्र गति से गर्म होता जा रहा है। ऐसे में महासागरों का जलस्तर बढ़ने से तमाम द्वीपों व देशों के विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। इससे जहाँ जनसंख्या पलायन की समस्या उत्पन्न हुई है, वहीं समुद्री जीव-जन्तुओं के विलुप्त होने की संभावनाएँ भी उत्पन्न हो गई हैं।

वस्तुतः जब हम पर्यावरण की बात करते हैं तो यह एक व्यापक शब्द है। जिसमें पेड़-पौधे, जल, नदियाँ, पहाड़ इत्यादि से लेकर हमारा समूचा परिवेश सम्मिलित है। हमारी हर गतिविधि इनसे प्रभावित होती है और इन्हें प्रभावित करती भी है। कभी लोग

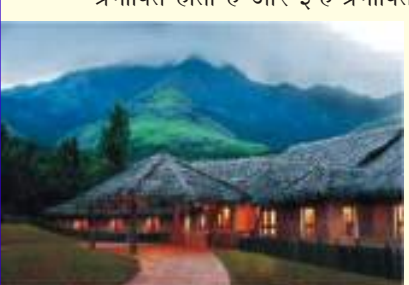

गर्मी में ठंडक के लिए पहाड़ों पर जाया करते थे, पर वहाँ भी लोगों ने पेड़ों को काटकर रिसोर्ट और होटल बनाने आरम्भ कर दिए। कोई यह क्यों नहीं सोचता कि लोग पहाड़ों पर वहाँ के मौसम, प्रकृतिक परिवेश की खूबसूरती का आनन्द लेना चाहते हैं, न कि कंक्रीटों का। पर लगता है जब तक यह बात समझ में आयेगी तब तक काफी देर हो चुकेगी। ग्लोबल वार्मिंग अपना रंग दिखाने लगी है, लोग गर्मी में ४५ डिग्री सेल्सियस पर तापमान के आने का रोना रो रहे हैं, पर इसके लिए कोई कदम नहीं उठाना चाहता। सारी जिम्मेदारी बस सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं की है। जब तक हम इस मानसिकता से नहीं उबरेंगे तब तक पर्यावरण के नारों से कुछ नहीं होने वाला है। आइये आज कुछ ऐसा सोचते हैं, जो हम कर सकते हैं। जिसकी शुरूआत हम स्वयं से या अपनी मित्रमंडली से कर सकते हैं। हम क्यों सरकार का मुँह देखें? पृथ्वी हमारी है, पर्यावरण हमारा है तो फिर इसकी सुरक्षा भी तो हमारा कर्तव्य है। कुछ बातों पर गौर कीजिए, जिसे हम अपने परिवार और मित्र-जनों के साथ मिलकर करने की सोच सकते हैं। आप भी इस ओर एक कदम बढ़ा सकते हैं।

जैव विविधता के संरक्षण एवं प्रकृति के प्रति अनुराग पैदा करने हेतु फूलों को तोड़कर उपहार में बुके देने की बजाय गमले में लगे पौधे भेंट किए जाएँ। स्कूल में बच्चों को पुरस्कार के रूप में पौधे देकर, उनके अन्दर बचपन से ही पर्यावरण संरक्षण का बोध कराया जा सकता है। इसी प्रकार सूखे वृक्षों को तभी काटा जाए, जब उनकी जगह कम से कम दो नए पौधे लगाने का प्रण लिया जाए। जीवन के यादगार दिनों मसलन- जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगाँठ या अन्य किसी शुभ कार्य की स्मृतियों को सहेजने के लिए पौधे लगाकर उनका पोषण करना चाहिए ताकि सतत् संपोष्य विकास की अवधारणा निरन्तर फलती-फूलती रहे। यह और भी समृद्ध होगा यदि अपनी वंशावली को सुरक्षित रखने हेतु ऐसे बगीचे तैयार किए जाएँ जहाँ हर पीढ़ी द्वारा लगाए गए पौधे मौजूद हों। यह मजेदार भी होगा और पर्यावरण को सुरक्षित रखने की दिशा में एक नेक कदम भी।

आज के उपभोक्तावादी जीवन में इको फ्रेंडली होना बहुत जरूरी है। पानी और बिजली का अपव्यय रोककर हम इसका निर्वाह कर सकते हैं। फ्लश का इस्तेमाल कम से कम करें। शानो-शौकत में बिजली की खपत को स्वतः रोककर लोगों को प्रेरणा भी दे सकते हैं। इसी प्रकार री-सायकलिंग द्वारा पानी की बर्बादी रोककर टॉयलेट इत्यादि में इनका उपयोग किया जा सकता है।

मानव को यह नहीं भूलना चाहिए कि हम कितना भी विकास कर लें, पर पर्यावरण की सुरक्षा को ललकार कर किया गया कोई भी कार्य समूची मानवता को खतरे में डाल सकता है। अतः जरूरत है कि अभी से प्रकृति व पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेत हुआ जाए और इसे समृद्ध करने की दिशा में तत्पर हुआ जाए।

टाईप ५ निदेशक बंगला, जीपीओ कैम्पस
सिसिल लाइन्स, इलाहबाद- २११००१

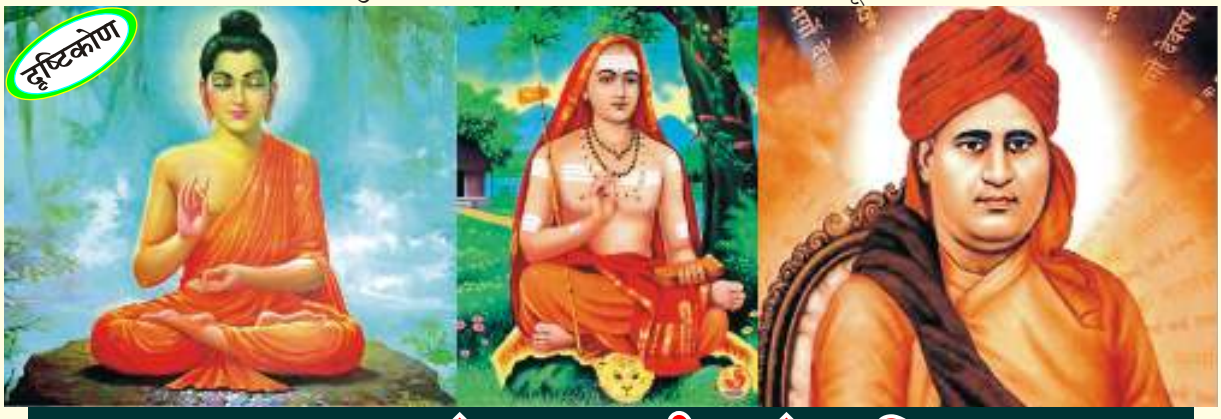

वैदिक धर्म के खिलाफ बुद्ध ने सबसे पहले विद्रोह किया और लोगों को सरल तथा व्यावहारिक धर्ममार्ग का उपदेश दिया। पुरोहितों के प्रति उनके मन में तिरस्कार की भावना थी। वे सभी वैदिक कर्मकांडों को व्यर्थ मानते थे और ब्राह्मणों के घोर विरोधी थे।

भारत के इतिहास और संस्कृति में बुद्धदेव की चर्चा इसी तरह के शब्दों में की जाती है। उनके जीवन प्रसंगों का अध्ययन करने पर विचारशील व्यक्तियों को यह कल्पना भी नहीं उठानी चाहिये कि बुद्ध जैसा महाकरुणावान व्यक्ति किसी के लिए तिरस्कार का भाव रख सकता है और किसी खास वर्ग का घोर विरोधी हो सकता है।

उनकी एक कथा अक्सर सुनी जाती है। कथा है कि एक बार बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य को किसी स्थान पर धर्मोपदेश के लिए जाने को कहा, जहाँ के लोग बहुत असभ्य थे। वह शिष्य जाने को तैयार हो गया तो बुद्धदेव ने कहा, ''जानते

महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य एवं ऋषि दयानन्द

हो, वे लोग बहुत असभ्य हैं। वे तुम्हारी बात सुनने से इंकार कर सकते हैं।'' उस शिष्य ने कहा, कोई बात नहीं मैं उनसे दुबारा अपनी बात कहूँगा।'' इस पर बुद्ध ने कहा, ''वे तुम्हें गालियाँ देकर भगा सकते हैं।'' शिष्य ने गालियों का बुरा नहीं मानने की बात कही और यह भी कहा कि, ''गालियाँ ही तो देंगे मारेंगे तो नहीं न। वे इतनी दया करेंगे, यह बात कम है?'' और वे तुम्हें मारें तो? बुद्धदेव ने पूछा। इस पर भिक्षु ने कहा था, ''मैं उन लोगों को फिर भी धन्यवाद दूँगा कि उन्होंने मेरे प्राण नहीं लिए।'' भगवान बुद्ध ने उसके बाद मारे जाने की संभावना भी बताई। इस पर शिष्य ने कहा, ''मैं फिर भी उनके लिए मन में कोई दुर्भाव नहीं रखूँगा। इसके बाद उन्हें धन्यवाद ही दूँगा कि उन्होंने मुझे इस दुःखरूप संसार से मुक्त करा दिया। इतना धैर्य और निर्वैर रखने वाले भिक्षु को बुद्ध ने सुयोग्य भिक्षु माना। धैर्य और वैर भाव से मुक्ति को भिक्षु की पात्रता मानने वाला व्यक्तित्व किसी के तिरस्कार और घोर विरोध की भावना कैसे रख सकता है?

बुद्ध वैदिक धर्म के आलोचक, विरोधी या विध्वंसक नहीं, एक सुधारक और व्यावहारिक धर्म के उपदेशक थे। उस समय समाज में जड़ता छायी हुई थी। धर्म का अर्थ कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह गया था। यज्ञ, पशुबलि और नरबलि प्रमुख धार्मिक आचरण बन गए थे। इन कुरीतियों में धर्म का वास्तविक स्वरूप खोता सा जा रहा था। वर्ण व्यवस्था में ऊँच-नीच की कोढ़ फूट चली थी। उस वातावरण में बुद्ध ने चरित्र, संस्कार और साधना को असली धर्म बताया तथा धार्मिक कर्मकाण्डों की चर्चा भी नहीं की। इसका कारण विरोध नहीं, सत्य के प्रति आग्रह ही था।

एक सहस्र दो सौ वर्ष पूर्व शंकर ने अपनी माँ से कहा- ''मैं साधु बन जाऊँगा, सन्यास लूँगा।'' ममता भरी माँ ने चिल्लाकर कहा, ''यह कैसे हो सकता है? अभी तू बच्चा है। अभी तू बड़ा होगा तो तेरा विवाह करूँगी, बाजे बजेंगे।'' शंकर ने कहा, नहीं माँ! यह सब कुछ मुझे करना नहीं। मुझे एक और कार्य करना है, आज्ञा दो।'' माँ नहीं मानी तो शंकर बोले, ''अच्छा माँ''! चल नदी पर नहाने चलें। मैं नहाऊँगा तू देखना।''

नदी के किनारे पहुँच कर माँ ने कहा, बहुत आगे नहीं जाना, पानी अधिक है।'' शंकर कपड़े उतारकर नहाते हुए आगे बढ़े, तभी शोर मचा दिया, ''माँ मुझे मगर ने पकड़ लिया है, वह मुझे खींच लिए जा रहा है। तेरा पुत्र अब समाप्त हुआ।'' वीरान किनारे पर माँ चिल्ला उठी,

''हाय-हाय, मैं क्या करूँ?'' शंकर पानी में खड़े-खड़े बोले, ''माँ मगरमच्छ एक बात कहता है, बोलता है कि यदि तू संन्यासी हो जाए तो मैं तुझे छोड़ दूँगा। ''माँ ने घबराकर कहा, ''ऐसी बात न कह! इसे कह, तुझे छोड़ दे।'' शंकर बोला वह मुझे घसीटे लिये जाता है। तू यदि आज्ञा दे तो मैं इसे संन्यासी होने का वचन दे दूँ।'' माँ ने रोते हुए कहा, ''मैं वचन देती हूँ।'' शंकर बोले, ''वह अभी संन्यासी होने की बात कहता है। ''माँ ने कहा, अभी हो जाना, इसे कह तुझे छोड़ तो दे।'' और इस प्रकार आज्ञा लेकर शंकर संन्यासी हुए। आठ वर्ष की आयु में नर्मदा के तट पर स्वामी गोविन्दानन्द से उन्होंने दीक्षा ली।

आचार्य शंकर अद्धैत-वेदांत के प्रतिष्ठाता तथा संन्यासी संप्रदाय के गुरु माने जाते हैं। उनकी प्रतिभा अपूर्व थी। उनकी साधना अलौकिक और हम कह सकते हैं कि अपनी तेजस्विता तथा दिव्यज्ञान के फलस्वरूप ही उन्होंने हिन्दू धर्म को ह्रास से बचा लिया था। आचार्य शंकर केवल अद्वैतवादी ही नहीं थे वरन् वे द्वैत तथा विशिष्टाद्वैत को भी मान्यता देते थे। असल में वे इन्हें अद्वैतवाद तक पहुँचने की सीढ़ी मानते थे। ईश्वरानुराग तथा भगवद्भक्ति उनमें प्रगाढ़ थी। फलतः उनके द्वारा विरचित अनेकानेक श्लोक तथा स्त्रोत भक्तिभाव से ओत प्रोत हैं। सत्य तो यह है कि उनके स्त्रोतों का लालित्य, उनका माधुर्य तथा उनकी हृदयग्राही शक्ति रचयिता आचार्य शंकर की दिव्य श्रद्धा का ही प्रतिबिंब है।

आचार्य शंकर ने हिन्दू धर्म में अनेक आवश्यक एवं निर्माणकारी सुधार किये और उसे पुष्ट नींव पर पुनःस्थापित किया। भारत वर्ष की चारों दिशाओं में आचार्य शंकर ने चार पीठ की स्थापना की जिनका मुख्य उद्देश्य है वेदान्त का प्रचार एवं प्रसार। इन चार पीठों के द्वारा आचार्य शंकर ने भारत वर्ष में आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक सामंजस्य एवं ऐक्य संस्थापना का बहुत बड़ा कार्य किया। स्पष्ट है कितनी प्रखर थी उनकी दूरदर्शिता। भारत के इतिहास में इस महत्वपूर्ण कार्य का अपना अद्वितीय स्थान है। कहना न होगा, इस महान् कार्य के पार्श्व मे निहित था आचार्य का आत्मबल और उनका निर्मल जनहित चिन्तन।

१६० वर्ष पूर्व पश्चिम भारत के गुजरात के टंकारा नामक ग्राम में एक बालक उत्पन्न हुआ उसका नाम मूलशंकर था। शिवरात्रि के दिन प्रातः से सायंकाल तक व्रत रखकर वह बैठा रहा। सोचता रहा, आज रात को शिव के दर्शन होंगे। रात्रि आई। सब लोग सो गये। रात्रि के तीसरे पहर उसने देखा कि एक चूहा शिव के ऊपर चढ़े मिष्ठान्न को आनंद पूर्वक भोग रहा है, तो उसके मन के भीतर कोई चिल्ला उठा, 'ये तो भगवान शिवशंकर नहीं हैं। ये तो कैलाशपति नहीं हैं।' तब कुछ दिन के पश्चात् उनकी बहिन मर गई। लोग रोये। मूलशंकर ने आश्चर्य से पूछा, ''क्या सबको मरना पड़ता है?'' उत्तर मिला ''सबको।'' तभी कुछ दिनों के पश्चात् उनके चाचा की मृत्यु गई; मौत उनके एक और प्यारे को ले गई। मूलशंकर के आँसुओं का बाँध टूट गया, चुप कराते, वह चुप न होता; बार-बार सोचता, 'मैं ऐसे संसार में नहीं रहूँगा, जहाँ शिव नहीं है, जहाँ जीवन का अंत मृत्यु है।' वैराग्य का वेग जाग उठा हृदय के अंदर! संबन्धियों ने सोचा, 'इसका विवाह करा दें, बहू आयेगी तो वैराग्य को भूल जायेगा।' विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। मूलशंकर के हृदय में भूकंप आने लगा। तब एक रात उनकी विचार धारा ने एक दृढ़ निश्चय किया- ''सच्चे शिव की तलाश करनी है और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी है तो घर से निकल, उन लोगों के पास पहुँचे जिन्होंने मृत्यु पर विजय पाई।'' उससे अगली प्रातः यह बालक घर में नहीं था। घोर तप, न थकने वाली खोज के मार्ग चल पड़ा था, जिसने उसे महर्षि दयानन्द बना दिया।

देश की एकता के निमित्त गुजराती का पक्षपात छोड़कर हिन्दी को अपनाया। परन्तु आर्य समाज के नियम बनाने के समय छठे नियम में स्पष्ट लिख दिया ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'' गौण रूप से बचा खुचा समय विश्व कल्याण को, मुख्य उद्देश्य ऋषि दयानन्द ने ही बनाकर दिया। परन्तु व्यक्तिगत रूप से जो उन्हें विष

देने आया उसे मुक्त करवाते समय कहा ''मैं संसार को कारागार में बन्द करने नहीं आया किन्तु कारागार से छुड़ाने आया हूँ'' और अंत में विष खाकर विष देने वाले को दयार्द्र होकर धन देकर विदा किया और दयानन्द इस नाम को सार्थक किया।

स्वामी दयानन्द के शब्दों में ''अपनी प्यारी भगिनी और पूज्य चाचा की मृत्यु से वैराग्यवान् होकर वन-वन में कौपीन मात्र व शेष दिगम्बरी दशा में फिरना, घोर तप-तपस्या करना और अंत में मृत्युंजय महौषध को ब्रह्म समाधि में लाभ कर लेना' यह महर्षि के जीवन का अंश बुद्ध देव के समान दिखाई देता है। धुरंधर वादियों के सम्मुख श्री शंकराचार्य का रूप दिखा देते हैं। दीन-दुखियों, अपाहिजों और अनाथों को देखकर श्रीमद्दयानंद जी करुणासागर में डूब जाते हैं। एक ईश्वर का प्रचार करते और विस्तृत भ्रातृभाव की शिक्षा देते हुए भगवान दयानंद जी विशुद्ध वैदिक धर्म के यथार्थ को स्थापित करते हैं। ईश्वर का यशोगान करते हुए स्तुति प्रार्थना में जब प्रभु दयानंद इतने निमग्न हो जाते हैं कि उनकी आँखों से परमात्म प्रेम की अविरल अश्रुधारा निकल आती है, गद्गद्-कण्ठ और पुलिकितगत हो जाते हैं, तब वे संतशिरोमणि जान पड़ते हैं। आर्यत्व की रक्षा के समय, वे प्रातःस्मरणीय प्रताप, श्री शिवाजी तथा गुरु गोविंद सिंह का रूप धारण कर लेते हैं।

महाराज के जीवन को जिस पक्ष से देखें वह सर्वांग सुन्दर प्रतीत होता है। त्याग और वैराग्य की उसमें न्यूनता नहीं है। श्रद्धा और भक्ति उसमें अपार पाई जाती है। उसमें ज्ञान अगाध है। तर्क अथाह है। वह समयोचित मति का मंदिर है। प्रेम और उपकार का पुंज है। कृपा और सहानुभूति उसमें कूट-कूटकर भरी पड़ी है। वह ओज है, तेज है, परम प्रताप है, लोकहित है और सकल कला सम्पूर्ण है।''

महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य एवं दयानंद सरस्वती के जीवन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि ऋषि दयानंद के अंदर बुद्ध एवं शंकराचार्य के मौलिक तत्व पूर्णरूप से समाहित हैं और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ऋषिवर की तुलना न तो बुद्ध से की जा सकती है न ही शंकराचार्य से। न ही उनकी तुलना ईसा से की जा सकती है ना ही मुहम्मद से। ना ही उनकी तुलना राणा, शिवा, गुरुगोविंद सिंह से की जा सकती है और नहीं कबीर, दादू, नानक, तुकाराम व संत तुलसीदास से। दयानंद तो बस दयानंद ही थे। दयानंद की तुलना केवल और केवल दयानंद से ही की जा सकती है। दयानंद तो अतुलनीय हैं। विश्व कल्याणार्थ दयानंद ने जो कुछ किया वह अतुलनीय है, वर्णनातीत है एवं अपरिभाषित है। अंत में एक कवि के शब्दों में-

गिने जाएँ मुमकिन है सहरा के जर्रे।
समुन्दर के कतरे फलक के सितारे।।
मगर तेरे अहसाँ दयानंद स्वामी।
हैं कैसे मुमकिन गिने जाएँ सारे।।

आचार्य उमा शंकर शास्त्री
प्राचार्य- महर्षि दयानंद सरस्वती बाल मंदिर
तेघरा, बेगूसराय (बिहार)

अवश्य ध्यान दें

जुलाई १४ तक आजीवन सदस्य बनने वालों को १००रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर उपहार स्वरूप दिया जावेगा (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला)। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया जा रहा है।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४०₹

प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

शील उड़ाती चली हवा मानव मानवता भूल गया

बगुला सीधा सादा सफेद व सुन्दर होता है। जलाशय के किनारे किनारे बहुत धीरे-धीरे चलता है-कहीं किसी जल जन्तु को उसके पैरों से चोट न लग जाये। ध्यानावस्थित भी कितना, किसी सन्त महात्मा जितना। मछलियों को पता ही नहीं चलने पाता कि आसपास में कोई बगुला भी है, उन्हें पता तभी चलता है कि जब वे उसकी चोंच के चंगुल में आती हैं और झट से गटक ली जाती हैं। मछली को गटकने के बाद वह फिर शांतिमूर्ति बन जाता है, और मछली के ध्यान में डूब जाता है। यही बगुला आज की सभ्यता का प्रतिनिधि है जो ऊपर से 'सन्त' और भीतर से 'हन्त' का सुलभ साक्षात् स्वरूप प्रदर्शित करता है। राजसिंहासन त्याग कर वैराग्य वरण करने वाले महात्मा भर्तृहरि ने ऐसे ही परिदृश्य को यों व्यक्त किया है-

'दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यायालङ्कृतोऽपिसन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौन भयंकर ॥'

कोई कितना ही बड़ा विद्वान् किन्तु दुर्जन हो वह उसी प्रकार त्याज्य होता है जिस प्रकार मणिभूषित भयंकर सर्प त्याज्य होता है। बिजली विभाग के बाबू ने लम्बे समय तक उपभोक्ताओं से बिल का भुगतान प्राप्त किया, उन्हें रसीदें भी दीं, किन्तु धन कोषागार में जमा नहीं किया। एक दिन पकड़ा गया, किन्तु तब तक आलीशान कोठियाँ व अन्य सुख साधन जुटा चुका था और फरार हो चुका था। डाकघर का अदना सा बाबू भिन्न-भिन्न योजनाओं में ग्राहकों का धन जमा करता रहा, किन्तु कोषागार में जमा नहीं किया। करोड़ों रुपये हड़पने के बाद बात खुली, अभियोग चला। एक दिन

उसके पुत्र ने पुलिस के सामने पहिचान की, कि रेल की पटरी पर शव पड़ा है, वह उसके पिता हैं और पुष्टि के लिए कुछ अभिलेख भी शव की जेब में बरामद हुए। थोड़े ही दिनों बाद वह बाबू जीवित पकड़ में आ गया। अपने बचने के लिए किसी बेकसूर अबोध युवक को उसने मार दिया था। खूब सजे धजे चमकदार वस्त्रों में युवक युवती दो पहिया वाहन पर चढ़कर खेतों की ओर पहुँचे और काम करते किसानों के देखते-देखते एक गत्ते के डिब्बे को दिन दहाड़े वहाँ छोड़ कर लौट गए।

डिब्बे को खोलकर किसानों ने देखा तो उसमें पाया एक नवजात शिशु के मुख में दूषित रक्त सना कपड़ा ठुंसा है और वह अंतिम श्वास ले रहा है। रात्रि के अन्धकार में एक सुसज्जित आकर्षक युवती असहाय खड़ी सहायतार्थ मुखमुद्रा दिखाती प्रतीत हो रही। करुण भाव से अपनी कार को रोककर सवार उसका हाल जानना चाहते हैं, लो इतने में उस युवती के कई साथी लुटेरे आ धमकते हैं और कार वाले का हाल चाल बिगाड़ देते हैं। पिट-पिटा कर व लुट-लुटाकर चीखते चिल्लाते हुए वे सड़क पर और लुटेरे युवती सहित कार पर सवार होकर रफूचक्कर हो जाते हैं। मृतक आश्रित के रूप में चपरासी की ही सही सरकारी नौकरी पाने के लिए, सेवानिवृत्ति से पूर्व ही पुत्र पिता को मार देता है, अथवा नशाखोरी की लत की असीम तृष्णा की तृप्ति के लिए युवक माता-पिता व परिजनों की हत्या करने में संकोच दया या भय का किंचित आभास नहीं करते हैं।

बहुमंजिले विशाल भवन समूहों में रहने वाले वैभव सम्पन्न परिवार अपनी रक्षा के लिए द्वार-प्रति द्वार रक्षक अंगरक्षक

रखते हैं किन्तु भीतर ही भीतर किशोर युवती, पुरुष, सेवक-स्वामी या किसी की भी हत्या हो जाती है। दूरदर्शन की शृंखलाओं में इन घटनाओं को चटखारे लेकर प्रदर्शित किया जाता है। एक दिन के अखबार में इस प्रकार की जितनी अवांछित घटनायें छपती हैं, यहाँ उनके शीर्षक मात्र लिखें तो भी लेख अधूरा ही रह जायेगा। पूरा भारत देश विकास के लिए प्रयत्नशील है। ग्राम, विकास खण्ड, तहसील, जनपद, मण्डल, प्रदेश और राष्ट्र के सर्वोच्च स्तर पर राजनेता, व्यवस्थापक अधिकारी व कर्मचारीगण देश के भौतिक विकास के लिए दिन रात जुटे हुए हैं, पर इस विकास का प्रवाह भी विचित्र है। पानी की धारा ऊपर से नीचे की ओर स्वाभाविक रूप से बहती है, किन्तु मोटर मशीन के द्वारा उसे ऊपर भी चढ़ा लिया जाता है। पैसा राज्यकर्मचारियों की मशीनरी द्वारा करों के रूप में ऊपर राजकोष में एकत्रित होता है, और यही मशीनरी पैसों को विकास के कार्यों के निमित्त ग्राम स्तर पर नीचे पहुँचाती है तो वह मशीनरी में ही अटक कर रह जाता है, पात्र तक नहीं पहुँचता, और अपात्रों में ही बँट जाता है। जितने अधिक निरीक्षक पर निरीक्षक रखे जाते हैं उतने ही अधिक ग्रहण करने वाले हाथ बढ़ते जाते हैं और वितरण वाले हाथ कम पड़ जाते हैं। ग्राम पंचायत की बात एक ओर छोड़िये, राष्ट्रीय अल्पमत को बहुमत में परिवर्तित करके अपने राज्यासन पर आरुढ़ रहकर मनमानी करने के लिए न केवल सक्षम, प्रत्युत स्वतंत्र भी बने रहते हैं। अपना या अपने उच्चासन के सम्मान का ध्यान न रखकर उसकी शक्ति को अत्याचार, अनाचार में प्रयोग करने लगते हैं, और एक दिन दूर तक फैले हुए हाथों में हथकड़ियाँ पड़ जाती हैं, वे राज्यगृह से कारागृह में बन्द कर दिए जाते हैं। अपनी सुख सुविधाओं के लिए वे बन्दी रक्षकों में गिड़गिड़ाते हुए निरीह बन जाते हैं।

वी.वी.आई.पी. हेलीकॉप्टर सौदे में कथित तौर पर दलाली दिए जाने के प्रकरण में रक्षा मंत्री ए.के.एंटनी की पीड़ा 'हमारे मंत्रालय में जब भी इस तरह का कोई विवाद उठता है तो मैं शर्मिन्दगी महसूस करता हूँ। (दै.हि.२८.२.२०१३) यदि ऐसी ही अनुभूति सभी नियंत्रकों की हो जाए तो स्वच्छ सकरात्मक संदेश राजा प्रजा दोनों ही स्तरों पर प्राप्त होने लगे। आहार-विहार दो कार्य ऐसे हैं जिन्हें न मनुष्य को सिखाना पड़ता है और न पशुओं को। स्वाभाविक प्रक्रिया है कि जीवित रहने के लिए सभी आहार के लिए अपने मुख प्राकृतिक रूप से खोलते हैं। नन्हा बच्चा भी कोई वस्तु पकड़ता है तो सीधे मुख की ओर ले जाता है। यह खाद्य है अथवा अखाद्य है इसका ध्यान उसके माता-पिता आदि को रखना पड़ता है। पशुओं को हाथ भी नहीं चाहिए। वे सीधे मुख से ही यह कार्य करते हैं। वे खाने योग्य पदार्थ को ही खाते हैं, और अखाद्य को कोई उन्हें खिला नहीं सकता। इसी प्रकार सन्तानोत्पत्ति के लिए मैथुन में रत होने के भी अपने नियम हैं। इन दो कार्यों को करने के लिए शिक्षण प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं। पशु मर भले जाये पर वे प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध कोई परीक्षण व प्रशिक्षण स्वीकार नहीं करते हैं।

पश्चिमी जगत् में गायों से अधिक मांस पाने की इच्छा से, उन्हें चारादाना में मिलाकर धोखे से मांस खिला दिया गया। उन्हें मैडकाऊ रोग हुआ, जिससे मांसाहारी मनुष्य भी रोगग्रस्त होकर मरने लगे। मानव जिसे बुद्धिमान श्रेष्ठ

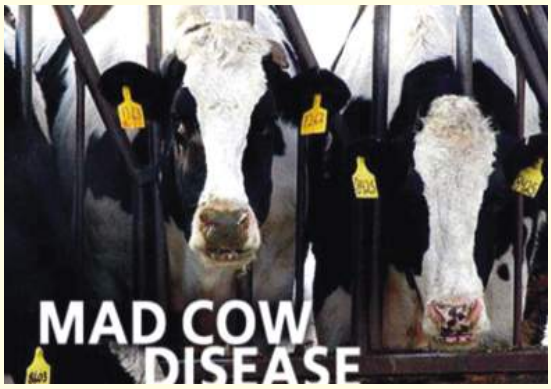

योनि का शीर्ष प्रतिनिधि कहा जाता है, जिसे यौन शिक्षा के नाम पर भोग भिक्षा का पात्र विदेशी व्यवसायी संगठन इसलिए बनाते हैं कि मनुष्य असीमित यौनाचार के कारण एड्स रोग से बचने के लिए उनके निरोध खरीदें और जेब खाली करते रहें। खान-पान व भोग विकास में वे ऐसा ही प्रचार भारत में करते हैं।

यह सारी वेदनाएँ इसीलिए हैं कि हमने वेद और वैदिक संस्कृति की शिक्षाओं की उपेक्षा कर दी है। वेद कहता है कि मनुष्य तीन सत्ताओं के सहारे चलता है। प्रथम प्रकृति के तत्वों से उसका शरीर बनता है, शरीर भी तब बनता है जब जीवात्मा उसके अन्दर बैठ चुका होता है। जीवात्मा भी शरीर-संसार संचालन के लिए शक्तियों को परमात्मा से प्राप्त करता है। आत्मा निकल जाने के बाद शरीर को नष्ट होने से कोई बचा नहीं सकता। हम शरीर को सजाते सँवारते रहते हैं और आत्मा की चिन्ता नहीं करते, प्रत्युत् उल्टे उसके परमात्मा की ओर अग्रसर होने के मार्ग में रोड़े

बिछाते रहते हैं। शरीर को सजाना सभ्यता और आत्मा को सजाने की कला का नाम संस्कृति है। इसके लिए वेद भगवान ने एक सरल सूत्र हमको यों सुझाया है-

संभले मलं सादयित्वा कम्बले दुरितं वयम्।
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूंषि तारिषत्॥-अथर्व १४.२.६७

भावाशय है कि परस्पर समझदारी से सँभल कर चलने वाले व्यक्ति अपनी कामनाओं पर मल व दुरित दुर्व्यसन की पर्त नहीं चढ़ने देते हैं, और निश्चय पूर्वक श्रेष्ठ यज्ञपरक परोपकारी कार्यों को करते हुए, अपने शरीर व आत्मा को प्रखर-परिशुद्ध रखकर अपने जीवनों को बढ़ाते हैं। नीतिवक्ता महात्मा विदुर जी ऐसा ही समर्थन करते प्रतीत होते हैं।

जिता सभा वस्त्रवता मिष्टाशा गोमता जिता।
अध्वाजितो यानवता सर्वंशीलवता जितम्॥
शीलं प्रधानं पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः॥ - २-४७.४८

वस्त्रों के साज-शृंगार से सभा को, गौपालन से मिष्टान्न को, वाहन से मार्ग को जीत सकते हैं, किन्तु शील-शालीनता से सभी कुछ जीता जा सकता है। मानवीय गुणों में शील ही प्रधान है। इसके नष्ट हो जाने पर जीवित रहने का कोई प्रयोजन नहीं, चाहे धन धान्य बन्धुबान्धव कितने ही हों। पशु प्राण संरक्षिका मेनका गांधी लाख बतायें कि अण्डे मल तुल्य त्याज्य है किन्त आधुनिक सभ्यता उन्हें शाकाहारी बोलकर खाती है। दूरदर्शन की शृंखलाओं में देवी देवताओं के अभिनय करने वालों से जब उनके आहार के विषय में पूछते हैं तब उनका यह उत्तर कि उन्हें 'नान वेज' पसन्द है तो उनके प्रति उमड़ी श्रद्धा तो घृणा में बदल ही जाती है, वह चित्रकथा भी निराधार हो जाती है। मानव का शील ही प्राण है जिसके बिना आज की सभ्यता निष्प्राण निष्फल ही नहीं, मानवता की प्राण घातक भी है। सच्चरित्र मनुष्य अपने शील स्वभाव की रक्षा करके ही प्रभु प्रजा सभी का प्यारा बनता है, शील-सौजन्यता के नाश से बस पशुओं से भी नीचे गिरकर घृणा का पात्र बन जाता है।

- श्री देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका प्रथम
रामघाट मार्ग, अलीगढ़- २०२००१

आँधी है ! ज्वालामुखी ! ! या चुम्बक ध्रुव तारा, वेदों वाले ऋषि है क्या ? सत्यार्थ प्रकाश तुम्हारा।
चौदह रत्न मिले हैं जब-जब, होता रहा उदधि मन्थन, सुमेरू मथनी, शेष की रस्सी, नीलकण्ठ सा आलोडन।
देवों को शान्ति, दानव को क्लान्ति और फुफकारा, वेदों वाले ऋषि है क्या ? सत्यार्थ प्रकाश तुम्हारा।
मत मतान्तरों का कूड़ा कर्कट, बाहर धकेलता झोंक में, अन्ध विश्वास पाखण्ड तिमिर को, भस्म करता क्षणभर में।
अन्धों को लाठी दे दी, या बहरों को टंकारा, वेदों वाले ऋषि है क्या ? सत्यार्थ प्रकाश तुम्हारा।
वनस्पति में चन्दन, बूटी में केसर, और गुलाब एक फूलों में, अनुपम होता तुच्छ सीप का, मोती चमचम लाखों में।
संस्कृत-संस्कृति कानन रोपा, या सहेज सँवारा, वेदों वाले ऋषि है क्या ? सत्यार्थ प्रकाश तुम्हारा।
बाँह पकड़ कर हमें उठा, कैसा उपकार किया है, भटकाते गोते खाने को, जीवन दान दिया है।
सुगन्ध देता बार-बार, यह घिसा जाय शतवारा, वेदों वाले ऋषि है क्या ? सत्यार्थ प्रकाश तुम्हारा।

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत', चेमदार गंज, नवादा

भक्ति, प्रेम और पुरुषार्थ की मूर्ति आचार्य प्रेमभिक्षु

ईश कृपया सत्य ग्रहण और असत्य परित्याग की उत्कट इच्छा बाल्यकाल से ही मेरे स्वभाव में रही है। इसी भावना के वशीभूत होकर अनेक सम्प्रदायों के विद्वानों, आचार्यों जिनमें कबीर पंथी, पौराणिक (कथित सनातनी) राधा स्वामी, इस्लामी, जैन, गायत्री परिवार के आचार्य श्रीराम शर्मा और वर्तमान विज्ञान के नास्तिक विद्वानों से सदैव आर्य समाज के चतुर्थ नियम के प्रकाश में शास्त्रार्थ संवाद किशोर अवस्था से ही करता रहा। फरवरी १९८७ में आर्य समाज मंदिर, गुलाब सागर, जोधपुर में सत्य प्रकाशन, मथुरा से प्रकाशित तपोभूमि मासिक पत्रिका का नवम्बर ८६ का अंक पढ़ने को मिला। यह अंक पूज्य आचार्य प्रेमभिक्षु जी महाराज द्वारा आचार्य श्रीराम शर्मा जी के नाम खुले पत्र के रूप में था। इस पत्र की भाषा और भावना से मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैंने तुरन्त आचार्य जी को पत्र लिखा, जिसकी प्रति आचार्य श्रीराम शर्मा जी को भी भेजी। उसके बाद मेरा आचार्य जी से सम्पर्क हो गया और ३ मार्च १९८८ को मैं अपनी शासकीय सेवा से त्यागपत्र देकर मथुरा आचार्य जी के पास चला गया। मेरा ऐसे कई व्यक्तियों से सम्पर्क हुआ जो यह कहा करते थे कि आचार्य प्रेमभिक्षु जी युवकों को लोभ देकर अथवा गुमराह करके वैदिक मिशनरी बनने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसा कहने वालों में मेरे कुछ परिवारीजन भी सम्मिलित थे। किन्तु मैं इस बात का दृढ़ता से खण्डन करते हुए यह कहूँगा कि वे आचार्य जी के पवित्र भावों से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। मैं उनके अत्यन्त निकट रहा। वे मेरे प्रारम्भिक व्याख्यान और कविता से अत्यन्त प्रभावित हुए पुनरपि मुझे प्रारम्भ में ही स्पष्ट कहा "बेटे! यह मत सोचना तुम यहाँ सुख भोगने के लिए आये हो। यहाँ रहकर तुम्हें तलवार की धार पर चलना होगा। अनेक कठिनाइयाँ, निन्दा व उपहासों को सहना होगा।" क्या इन वाक्यों को सुनकर कोई व्यक्ति यह कह सकता है कि उन्होंने मुझे भ्रमित करके शासकीय सेवा से त्यागपत्र दिलवाया था? मुझसे उनका पर्याप्त विचार विमर्श हुआ। आचार्य श्रीराम शर्मा जी को जो मैंने सन् १९८४ से चुनौती पूर्ण पत्र लिखे थे उनको पढ़कर वे बहुत प्रभावित हुए और कुछ दिन पश्चात् ही उन्होंने तथा श्री गुरु विरजानन्द ट्रस्ट, मथुरा के तत्कालीन प्रधान श्री बंशीधर जी अग्रवाल ने मुझे आचार्य श्रीराम शर्मा जी से पत्र व्यवहार आदि का काम सौंप दिया। आचार्य जी ने मुझे कभी कुछ पढ़ाया नहीं क्योंकि मेरा पूर्व से ही स्वाध्याय अन्य ब्रह्मचारियों की अपेक्षा अत्यन्त गम्भीर और प्रौढ़ था। इसके उपरान्त भी व्यक्तिगत चर्चा, संवाद उनका मुझसे ही अधिक होता था, जिसमें कुछ मास तक मेरे मित्र ब्र. नरेन्द्र जी जिज्ञासु (आजमगढ़) भी भागीदार रहे। आचार्य जी की आकांक्षा थी कि उस संस्था से मैं पूर्णतः जुड़कर उत्तरदायित्व सभालूँ। मृत्यु से कुछ माह पूर्व उन्होंने मुझे अस्वस्थ अवस्था में अपने घर पर बुलाकर कहा-"बेटे! अब तक मैं नाविक था और तुम लोग उस पर सवार थे। अब मैं संस्था की नाव तुम लोगों के पवित्र हाथों में देना चाहता हूँ और स्वयं एक सवार के रूप में रहना चाहता हूँ। यदि तुम इस नाव के नाविक बन जाते हो तो मृत्यु के समय मुझे शान्ति और संतोष का अनुभव होगा। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी भाँति सम्पूर्ण भारत में अपनी लेखनी और व्याख्यानों के माध्यम से आर्य समाज का प्रचार करते हुए इस संस्था के केन्द्र में रहो। प्रिय आचार्य स्वदेश गुरुकुल सँभालें और प्रिय ब्र. नरेन्द्र जिज्ञासु जिन्हें वे धर्मेन्द्र कहा करते थे, युवकों के संगठन का कार्य करें।"

मुझे खेद है कि मैं स्वास्थ्य आदि कई कारणों से न तो उनका आदेश वा आग्रह ही मान सका और न मथुरा ही रह सका। इससे लगभग ५ वर्ष पूर्व ही मैं स्वास्थ्य आदि कारणों से मथुरा छोड़कर आर्य समाज, भीनमाल में रहने लगा था। ग्रीष्मकाल में मथुरा जाता और वर्षा व शीतकाल में भीनमाल आ जाता। इस प्रकार मैं अपने गुरुभाई श्री आचार्य स्वदेश जी से कुछ व्याकरण पढ़ता रहा। तब आचार्य श्री ने मुझे आत्मीयता भरे कई पत्र लिखे। उनके कुछ वाक्य इस प्रकार हैं- "प्रियवर! जीवन भर जूझे हैं चैन नहीं पाया। आशा है

तुम शान्तिपूर्ण मृत्यु अवश्य दोगे-------। बड़ा दुरुह लक्ष्य है, तुम्हारा। अर्जुन की चिड़िया के शिरोभाग के लक्ष्य भेद की भाँति मात्र लक्ष्य पर दृष्टि रखो। लक्ष्य सिद्धि से पूर्व किसी अन्य के न्याय-अन्याय के प्रसंगों से बचो। शक्ति सम्पादित करो, पहले ही इधर-उधर उलझकर उसे बिखेरो नहीं। जहाँ फूल हैं वहाँ कांटे भी हैं। तुम फूल चुन लो काटों से मत उलझो। लक्ष्य प्राप्ति, शक्ति प्राप्ति तक ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करो। उधर से मौन हो जाओ। हाँ अपने स्वयं के जीवन में असत् न आने दो, सजग रहो।'' आचार्य जी के ये वाक्य आज और भी अधिक प्रासंगिक हो उठे हैं, जबकि मेरी लक्ष्य सिद्धि में आज सभी अपने ही बाधक बन रहे हैं। आचार्य जी केवल प्रभावशाली वक्ता ही नहीं थे अपितु अच्छे ब्रह्मचारियों के प्रति उनमें अपार प्रेम था। मैंने ऐसा स्नेह भाव केवल पूज्यपाद आचार्य डॉ. विशुद्धानन्द जी मिश्र महाराज के अतिरिक्त किसी अन्य विद्वान् में नहीं देखा। मैंने इन दोनों आचार्यों में कुछ ऐसे गुण देखे हैं, जिनका आज आर्य विद्वानों में प्रायः अकाल दिखाई देता है। देश और आर्य समाज की परिस्थितियों की मुझसे चर्चा करते समय मैंने इन दोनों ही आचार्यों के नेत्रों से अश्रुधारा को बहते देखा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं योगेश्वर श्रीकृष्ण जी जैसे प्राचीन महापुरुषों के प्रति जो भक्ति इन दोनों के हृदय में मैंने देखी है, वैसी अन्यत्र मुझे दिखाई नहीं दी। दुर्भाग्य से आज आर्य समाज में रामायण व महाभारत की वह प्रतिष्ठा नहीं रही, जो होनी चाहिये। हमारे लिये अत्यन्त उच्च आदर्श पुरुष महर्षि प्रवर ब्रह्मा, महादेव शिव एवं भगवान् विष्णु जैसे अनेकों देव पुरुषों और ऋषियों को इस अभागे आर्य समाज ने कूड़ेदान में डाल दिया है, जिनकी कोई चर्चा कहीं भी सुनाई नहीं देती। पौराणिकों ने इनको बदनाम किया और हमने इनको गुमनाम किया। इस कारण दोनों ही घोर अपराधी हैं। हमारे यहाँ कुछ ऐसे भी अभागे एवं दम्भी विद्वान् हैं, जो अपने को योगी सिद्ध करने के लिये श्रीराम एवं श्रीकृष्ण जैसे आप्त पुरुषों को अपूर्ण योगी बताकर आर्य जनता को भारतीय महापुरुषों से दूर करने का पाप करते हैं। इस दृष्टि से पूज्य आचार्य प्रेमभिक्षु जी बहुत महान् थे। वे भारतीय ऋषि परम्परा, देव परम्परा और तत्कालीन वैदिक क्षत्रियों के प्रति श्रद्धा की साक्षात् मूर्ति थे। वे इस विषय पर व्याख्यान देते-देते अत्यन्त भावुक हो जाया करते थे। इसके साथ-२ वे पौराणिक पाखण्डों के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में किसी भी अनार्ष मान्यता को कभी गले नहीं लगाया। वे केवल और केवल आर्य समाज के लिये समर्पित थे। वे ऋषि दयानन्द जी महाराज को उस रूप में मानते थे, जिसके कि ऋषि दयानन्द अधिकारी हैं। दुर्भाग्य से आज आर्य समाज में ऋषि दयानन्द के प्रति भी वह श्रद्धा कम होती जा रही है, जिसके कि ऋषि पात्र हैं। आज प्रायः ऋषि को एकांकी दृष्टि से देखा जा रहा है।

यद्यपि आचार्य जी ने मुझे कुछ नहीं पढ़ाया तथापि वे मुझे उच्च कोटि का वैदिक विद्वान् बनने के लिये सतत प्रेरित करते थे। मेरी संगीत और गायन में कुछ रुचि थी। मैं कुछ कविताओं और भजनों की रचना भी करता था और मेरे भजन आचार्य जी को बहुत अच्छे लगते थे। वे स्वयं भी कविहृदय तथा भजनों को अति मधुर स्वर व लय में भावविभोर होकर गाते थे, जिससे मुझे भक्ति रस के अद्भुत् आनन्द का अनुभव होता था। एक बार आचार्य जी की अनुपस्थिति में एक ब्रह्मचारी के आग्रह से मैंने भजनोपदेशक बनने के विचार से प्रेरित होकर मथुरा नगर में एक संगीत केन्द्र में जाकर हारमोनियम सीखने का विचार किया। जब मैं संगीत शिक्षक से बातचीत करने उस संगीत केन्द्र में गया तो वहाँ युवा संगीत शिक्षक को एक युवती को एकान्त में हारमोनियम सिखाते देखा तो मुझे उससे घृणा हो गई और बिना कोई बातचीत किये वहाँ से तुरन्त वापिस आ गया। जब आचार्य जी को इस घटना की जानकारी मिली तो वे मेरी ब्रह्मचर्य-निष्ठा से अति प्रसन्न हुए, परन्तु अत्यन्त प्रेम के वशीभूत होकर मुझसे कहने लगे- ''तुम्हें भजनोपदेशक नहीं बल्कि उच्चकोटि का वैदिक विद्वान् बनना है।''

एक बार किसी घटनावश मैंने सरिया मोड़ना, पीतल की थाली फाड़ना आदि शक्ति प्रदर्शन का अभ्यास प्रारम्भ ही किया था कि आचार्य जी को इसकी जानकारी मिल गई। दुर्बलकाय और अस्वस्थ अवस्था में मुझे ऐसा करते देखकर सभी ब्रह्मचारियों व आचार्य जी को आश्चर्य हुआ, परन्तु फिर उन्होंने प्रेम से मुझे इस कार्य से भी रोकते हुए कहा- ''तुम्हें पहलवान नहीं बल्कि मैं विद्वान् ही देखना चाहता हूँ। इसलिए विद्या में ही पूर्णतः संग्लन रहो।'' मथुरा गुरुकुल में जब भी कोई भी कार्यक्रम होता उस समय यज्ञशाला के मुख्य द्वार पर मैं एक सूचना अपनी ओर से चिपका देता, जिसमें किसी भी सम्प्रदाय से जुड़े व्यक्तियों एवं तथाकथित प्रबुद्ध नास्तिकों को शंका-समाधान का आह्वान होता था। इसको देखकर आचार्य जी बहुत अभिभूत होते थे। मैं जब कभी उनके चरण स्पर्श करता अथवा उनके अस्वस्थ होने पर उनसे कुशल पूछता, तब वे प्रत्युत्तर में कहा करते थे-''मेरे स्वास्थ्य तो तुम ही हो और मेरे भविष्य भी हो।'' यदि

आचार्य श्री आज जीवित होते तो मेरे लक्ष्य एवं वेद विज्ञान अनुसंधान कार्य को देखकर अतीव प्रसन्न होते। मुझे आशीर्वाद देने वाला एक हाथ तो होता, परन्तु .....।

अब मैं कुछ अन्य विषयों पर चर्चा करना चाहूँगा। आज ऐसे बहुत कम विद्वान् होंगे, जिनकी दिनचर्या वास्तव में व्यवस्थित होगी। "वास्तव में" शब्द इस कारण लिखे क्योंकि कई महानुभाव अपने भक्तों को दिखाने के लिये दिनचर्या को व्यवस्थित दिखाने का प्रयत्न करते हैं। मैंने कुछ विद्वानों को व्यंग्य-विनोद एवं कटु शब्दों में परनिन्दा में समय नष्ट करते देखा है, तो किसी को आलस में पड़े सोते भी देखा है, परन्तु मैंने आचार्य जी को प्रातः ४ बजे से लेकर रात्रि के लगभग १० बजे तक भोजनोपरान्त अल्प विश्राम के अतिरिक्त निरन्तर परिश्रम करते देखा है। यात्रा में भी अपने साथ पोस्टकार्ड आदि ले जाकर पत्र लेखन करते देखा है। आज जबकि अनेक विद्वानों और आर्य नेताओं में परस्पर ईर्ष्या-द्वेष भरे कटु लेखन का दौर इस अभागे आर्य समाज में चल रहा है। विधर्मियों के स्थान पर अपनों के विरुद्ध यहाँ तक कि अहंकार और द्वेष के वशीभूत होकर दिवंगत महात्माओं के प्रति भी कटु लेखन करने में स्वयं को धन्य माना जा रहा है, उसी आर्य समाज के एक उज्ज्वल रत्न उन महात्मा आचार्य जी को मैंने कभी भी किसी विद्वान् की निन्दा करते हुए सुना हो, यह मुझे स्मरण नहीं है। यदि मैंने उनसे किसी विद्वान् के सुने हुए दोषों पर पूछा तो वे मौन हो जाते थे, परन्तु उस विद्वान् के दोषों पर कोई टिप्पणी नहीं करते थे।

अन्त में मैं एक ऐसे बिन्दु पर लिखना चाहूँगा, जिस विषय पर मैं उनकी सदैव आलोचना सुनता रहा हूँ। वह विषय है, उनका अति मितव्ययी होना, जिसे लोग कृपणता नाम देते हैं और उनके द्वारा कर्मचारियों को विश्राम न करने देना, जिसे लोग शोषण कहते हैं। इस विषय में मेरा अनुभव इस प्रकार है-

मैंने आचार्य जी को स्वयं अति सीमित संसाधनों में कठिन परिश्रम करते देखा है। उनके कक्ष में मैंने कोई मेज तक नहीं देखी, जबकि वे सदैव लेखन कार्य में रत रहते थे। अपने तख्त पर बैठकर अथवा सरकण्डे के मूढ़े पर बैठकर कमर को झुकाकर सबसे सस्ते कलम से सुन्दर लेखन करते मैंने देखा है। एक पोस्टकार्ड में ही वे इतनी सामग्री लिख देते थे, जितना कोई सुलेखक एक अन्तर्देशीय पत्र में लिख सकता है। उनके पास कभी कोई निजी वाहन नहीं रहा, परन्तु छोटे-२ गाँवों से लेकर भारत के महानगरों तक पदयात्राओं, बसों और रेलों के द्वारा घूम-२ कर माँ आर्य समाज की जीवन भर सेवा की। उनका कमरा अति साधारण जिसमें वायु के आवागमन की भी व्यवस्था नहीं थी। भीषण गर्मी में भी कभी कूलर की व्यवस्था नहीं की। पसीने से स्नान करते हुए सतत लेखन आदि कार्य में रत रहने का उनका स्वभाव बन चुका था। साधनों की दृष्टि से उस अकिंचन महात्मा ने सर्वसाधन और ऐश्वर्यों से सम्पन्न गायत्री परिवार के संस्थापक और अपने पुराने मित्र आचार्य श्रीराम शर्मा जी को अनेक बार खुली चुनौती दी। आचार्य जी के मध्यम पुत्र श्री वेद प्रकाश आर्य जब गुर्दों के रोग से पीड़ित हुए तब मैंने उनसे पूछा, "आचार्य जी! चिकित्सकों का क्या परामर्श है?आप दिल्ली आदि महानगरों में उनकी चिकित्सा क्यों नहीं करा रहे?" तब उन्होंने मुझसे दुःखी होकर कहा कि "चिकित्सक गुर्दा परिवर्तन का परामर्श दे रहे हैं, जो बहुत व्यय साध्य है। मैं केवल अधिकतम ३० हजार रुपये ही खर्च कर सकता हूँ। इससे अधिक मेरे पास व्यवस्था नहीं है।" यह सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ कि जो व्यक्ति आर्य जगत् का लोकप्रिय वक्ता और सिद्ध हस्त लेखक है और जिसने अपने कपड़े के व्यापार की बलि देकर अपने जीवन को आर्य समाज के लिए समर्पित कर दिया है, वह व्यक्ति आज अपने पुत्र की उच्च स्तरीय चिकित्सा भी अर्थाभाव के कारण नहीं करा सकता, उस महान् आत्मा को जो लोग कंजूस परन्तु धनी कहते थे वा हैं, निश्चित ही वे बड़े अभागे, नादान अथवा द्वेषी हैं। ईश्वर उन्हें सुमति दे। मैंने उन्हें जब स्वयं अपव्यय करते नहीं देखा, सुविधायें भोगते नहीं देखा, चिकित्सक के परामर्श पर भी विश्राम करते नहीं देखा, तब मैं ऐसी अपेक्षा उनको दूसरों से करते देखकर उन्हें दोषी कैसे कह सकता हूँ?मैं तो इस विषय में इतना ही कह सकता हूँ कि उन्हें ऋषि के कार्य की इतनी धुन सवार थी कि वे स्वयं अपने शरीर के साथ भी न्याय नहीं कर सके और अपने अति परिश्रम से शरीर को क्षीण करके असमय ही आर्य समाज की अग्नि में हवि बनकर इस संसार से चले गये। यह प्रसन्नता की बात है कि आचार्य श्री के सुयोग्य पुत्र आदरणीय श्री अशोक जी आर्य अपने पितृचरणों का अनुगमन करके सत्यार्थ प्रकाश पर गहन चिन्तन मनन का अद्वितीय पुरुषार्थ कर रहे हैं। मैं उनके इस पुरुषार्थ से बहुत प्रभावित हूँ। निश्चित ही उनकी सिद्धान्त निष्ठा, निष्काम पुरुषार्थ एवं ऋषि भक्ति के पीछे उन्हीं महात्मा की प्रेरणा कार्य कर रही है। ऐसे प्रेम, पुरुषार्थ, ईश्वर भक्ति, राष्ट्र भक्ति, ऋषि भक्ति और वेद भक्ति के साक्षात प्रतीक आचार्य को शतशः नमन!!

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भीनमाल
दूरभाष- ०९८२९१४८००

सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास पर एक दृष्टि

- सुरेश चन्द्र दीक्षित

स्वामी दयानन्द ऐसे महान् पुरुष हुये हैं जिन्होंने वेदों व उपनिषदों की परतों को खोलकर यह बताने का प्रयास किया कि पृथ्वी व अन्य नक्षत्र कैसे बने तथा पृथ्वी के अलावा अन्य नक्षत्रों में जीवन की संभावनाएँ हैं या नहीं। सत्यार्थ प्रकाश में उनके द्वारा लिखित अष्टम समुल्लास में इन बातों का सटीक उत्तर है। आज जब वैज्ञानिक अपनी नई खोजों के द्वारा अन्य नक्षत्रों जैसे चन्द्रमा व मंगल पर जीवन जानने के लिए भीषण प्रयास व बड़ी राशि द्वारा यंत्र बनाकर खोज करने में व्यस्त रहते हैं वहाँ स्वामी दयानन्द ने वैदिक वाङ्मय के माध्यम से यह बात बताने का प्रयास किया कि हमारे ऋषि तो इस ज्ञान से करोड़ों वर्ष पूर्व भी अन्य ग्रहों में जीव की उपस्थिति जानते थे।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति।
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म ॥ तैत्तिरीयोपरिषद

इस मंत्र में यह बताया है कि ईश्वर ही विविध सृष्टि का धारण और प्रलयकर्ता है। परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारण रूप से कार्य रूप कर दिया। परमात्मा इस जगत् की उत्पत्ति के पूर्व

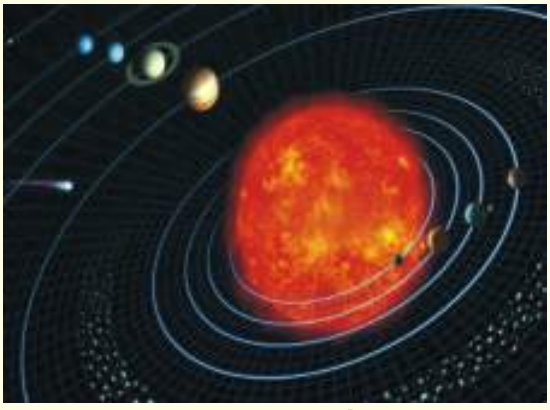

भी विद्यमान था, वही इस भूत, भविष्यत् और वर्तमानस्थ जगत् को बनाने वाला है। अतः हमें उसकी भक्ति में तत्पर रहना चाहिए।

ईश्वर ने पृथ्वी से लेकर अखिल संसार को उत्पन्न किया है। वही रचना और प्रलय करता है। ईश्वर, जीव और जगत् अनादि हैं। इसमें से जीव इस वृक्ष रूपी संसार में पाप-पुण्य रूप फलों को अच्छी तरह से भोगता है। परमात्मा कर्मों के फलों को नहीं भोगता है तथा सर्वत्र प्रकाशित हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप है। तीनों अनादि हैं। उपनिषद में कहा है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति का कभी जन्म नहीं होता है। इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फँसता है। परमात्मा न उसका भोग करता है और न फँसता है। सत, रज, तम अर्थात् जड़ता तीन वस्तु मिलकर एक संघात है उसका नाम प्रकृति है।

स्वामी जी एक प्रश्न के उत्तर में कहते हैं कि प्रकृति में पहले बीज बना फिर वृक्ष एवं विस्तार हुआ। ईश्वर निराकार है तथा भौतिक इन्द्रिय गोलक हस्त पादादि अवयवों से रहित है। परन्तु वह अपनी अनन्त शक्तियों से अनन्त काम करता है। शून्य आकाश, अदृश्य बिन्दु को भी कहते हैं। शून्य जड़ पदार्थ है। उस शून्य में सब जड़ पदार्थ अदृश्य रहते हैं। जैसे एक बिन्दु से रेखा, रेखाओं से गोला बनते हैं परन्तु शून्य को जानने वाला शून्य नहीं होता है। ईश्वर जीव को जैसा कर्म करता है वैसा ही फल देता है। बिना कर्त्ता के कोई भी क्रिया वा क्रियाजन्य पदार्थ नहीं बन सकता।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

ऋग्वेद में बताया है कि परमेश्वर ने पूर्व कल्प में सूर्य, चन्द्र, विद्युत्, पृथ्वी और अन्तरिक्ष आदि बनाये, वैसे आगे भी बनायेगा। अतः परमेश्वर कभी भूल चूक नहीं करता है। वास्तव में आकाश की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि बिना आकाश के प्रकृति और परमाणु कहाँ ठहर सकते हैं? आकाश के बाद वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, औषधि, अन्न, वीर्य और शरीर उत्पन्न होता है। जब सृष्टि का समय आता है तब परमात्मा उन परमसूक्ष्म पदार्थों को इकट्ठा करता है। इससे प्रकृति और अंहकार का रूप आता है। इसके बाद श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, घ्राण ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय वाक्, हस्त, पाद, उपस्थ और गुदा पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। ग्यारहवाँ मन उत्पन्न होता है। ईश्वर ने कितने जतन से शरीर की जटिलतम रचना की है जिसे वैज्ञानिक भी समझ नहीं पा रहे हैं। ईश्वर ने जीव और प्रकृति की रचना में बड़ा कमाल दिखाया है।

ऋषि कहते हैं कि पहिले पृथ्वी की रचना हुई। उसने अनेक जीवों को उत्पन्न किया। सृष्टि में शरीर रचना युवावस्था में हुई। अगर बाल रूप में होती तो पालन कौन करता तथा वृद्धावस्था में मैथुनी सृष्टि नहीं होती। सृष्टि का प्रारम्भ तिब्बत से हुआ। आर्य लोग तिब्बत से आये। जो विद्वान् थे, आर्य कहलाए तथा दुष्ट राक्षस या अनार्य। जगत् की उत्पत्ति में एक अरब छियानवें करोड़ कई लाख वर्ष व कई सहस्त्र वर्ष लगे। जैसे अनन्त आकाश के सामने बड़े भूगोल समुद्र के आगे जलकरा तुल्य नहीं है वैसे परमेश्वर के आगे यह लोक परमाणु तुल्य भी नहीं हैं। पृथिव्यादिलोक घूमते हैं तथा सूर्य अपनी ऊर्जा, प्रकाश और तेज के साथ अपनी परिधि में

घूमता है किन्तु किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। वैसे ही एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य प्रकाशक और दूसरे सब लोक लोकान्तर प्रकाश्य हैं। जैसे चन्द्रलोक सूर्य से प्रकाशित होता है वैसे ही पृथ्वी भी सूर्य से प्रकाशित हैं। चन्द्रमा और पृथ्वी के घूमने से व सूर्य के जो भाग सामने आता है उसमें रात-दिन, उदय अस्त, मध्याह्न होते हैं।

सृष्टि के भूलोकों में प्रजा रहती है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य इनका वसु है। अतः इनमें प्रजा रहती है। परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं होता तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है। इसलिए सर्वत्र मनुष्य सृष्टि है। सब लोकों में मनुष्य सृष्टि के आकार में अंतर मिलेगा जैसे भारतीय, अंग्रेज, जापानी, चीनी व अफ्रीकी। पेड़ पौधों व अन्य जीवों की बनावट में भी भिन्नता हो सकती है। परमेश्वर के अधीन जीव व जड़ पदार्थ हैं। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र परन्तु फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतंत्र है।

आधुनिक विज्ञान भी अन्य ग्रहों में जीवन, जल व वायु की जानकारी के लिए प्रयासरत् है। चन्द्रमा व मंगल ग्रह पर वैज्ञानिक अभियान प्रयासरत् हैं। स्वामी जी ने वर्षों पूर्व इस ज्ञान को वेदों के माध्यम से संसार के सामने रख दिया है। जिसका आठवें सम्मुलास में विवेचन है। इतिशम्

– रिटायर्ड प्रिंसपल
द्वारा आनंद एण्टरप्राइजेज, न्यूकोलोनी
गुमान पुरा कोटा

स्वास्थ्य

दौड़ें या चलें

व्यायाम की दुनिया में आजकल दौड़ना लोकप्रिय है। बाकी दुनिया की ही तरह भारत में भी लंबी दौड़ लगाने वालों के संगठन बन गए हैं, जो हॉफ मैराथन, मैराथन, सुपर मैराथन वगैरह आयोजित करते रहते हैं। दौड़ाकों को जरूरी मशविरा और सहायता देने वाले लोग भी काफी हैं। शायद आज की आधुनिक सुविधाओं व उपकरणों से भरी दुनिया में दौड़ना आदिम खुशी का प्रतीक बन गया है। इसके मुकाबले पैदल चलना या टहलना हमेशा से सबसे ज्यादा लोकप्रिय व्यायाम रहा है। कुछ लोग रोज टहलते हैं, कुछ को बीच-बीच में ख्याल आता है कि वजन बढ़ रहा है, तो वे कुछ दिन टहलते हैं और फिर छोड़ देते हैं। महात्मा गाँधी रोज दस मील टहलते थे। सरदार पटेल के बारे में कहा जाता है कि वह राजा-नवाबों को सुबह की सैर पर ले जाते थे और आराम के आदी राजा-नवाब सैर खत्म होने से पहले ही सरदार पटेल की शर्तों पर भारत में विलय के लिए मान जाते थे। लेकिन सवाल यह है कि सेहत के लिहाज से क्या बेहतर है, दौड़ना या चलना? अगर दौड़कर या चलकर समान कैलोरी खर्च की जाए, तो किससे ज्यादा फायदा होगा?

पिछले दिनों इस विषय पर कुछ अध्ययन हुए हैं। इन अध्ययनों से पता चलता है कि सेहत के लिहाज से दोनों ही बेहतरीन व्यायाम हैं, लेकिन दोनों के फायदे कुछ अलग-अलग हैं। दौड़कर या चलकर लगभग समान कैलोरी खर्च करने वाले दो समूहों की तुलनात्मक जाँच से यह मालूम हुआ कि वजन घटाने और कम वजन बनाए रखने के लिहाज से दौड़ना ज्यादा अच्छा व्यायाम है। दौड़ने वालों की कमर की नाप और बॉडी, मांस, इंडेक्स (बीएमआई) चलने वालों से कहीं बेहतर साबित हुए। बाकी कई फायदे दोनों ही समूहों के लिए एक जैसे थे, लेकिन यह पाया गया कि दिल की सेहत के लिए चलने से ज्यादा फायदा होता है। यानी अगर आपका मुख्य जोर वजन घटाने पर है, तो दौड़िए और अगर दिल का मामला है, तो तेज चलना अच्छा है। दौड़ने से वजन ज्यादा घटने की कई वजहें हैं। एक महत्वपूर्ण वजह तो यह है कि दौड़ने से मेटाबॉलिज्म ज्यादा तेज होता है, इसलिए ऊर्जा ज्यादा खर्च होती है। एक सुझाव यह भी है कि चलने या दौड़ने से पहले कुछ दूसरे व्यायाम करने, मसलन भार उठाने से वजन ज्यादा घटता है, क्योंकि इससे मेटाबॉलिज्म और भी ज्यादा तेज हो जाता है। अध्ययन में एक चीज यह सामने आई, दौड़ने से पेट में एक एंजाइम पेप्टाइड वाई-वाई ज्यादा बनता है। यह एंजाइम भूख पर नियंत्रण रखता है, इसलिए दौड़ने वालों की खुराक चलने वालों से कम होती है। यह देखा गया कि नियमित चलने वालों से अनियमित दौड़ने वालों का भी वजन कम रहा।

प्रस्तुतकर्ता– कुमार राधारमण

समाचार

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, मथुरा में प्रवेश प्रारम्भ

वृन्दावन विश्वविद्यालय अपने समय में विश्वविख्यात् रहा है एवं पूज्य नारायण स्वामी जी की तपःस्थली के रूप में जाना जाता रहा है। गुरुकुल अब पुनः अपने पुरातन स्वरूप में निखर कर अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार है। गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं जिसके लिए प्रवेश परीक्षा ली जायेगी। प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपरांत ही विद्यार्थी को कक्षा ६ एवं ७ में प्रवेश दिया जावेगा। जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी के न्यूनतम चार अध्याय कंठस्थ होंगे वह प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर कक्षा ८ में प्रवेश पा सकता है। गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है। भोजन आवास और अध्ययन आदि की उत्तम व्यवस्था है। आर्यजन इसका लाभ उठाने के लिए आमंत्रित हैं।

- आचार्य स्वदेश, कुलाधिपति, चलभाष- ६४५६८११५१६

आर्य समाज, विज्ञाननगर, कोटा के तत्वावधान में योग प्रशिक्षण एवं प्राणायाम शिविर सम्पन्न

आर्य समाज, विज्ञाननगर कोटा के द्वारा धार्मिक, आध्यात्मिक समारोह

एवं वार्षिकोत्सव ३ से ६ अप्रेल २०१४ में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री विरदीलाल गोस्वामी, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, पंडित शोभाराम आर्य एवं श्री गजेन्द्र सिंह ने अपने उद्बोधन प्रदान किए। इस अवसर पर कोटा जिले की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर पातंजल योग समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय एवं मुख्य योग प्रशिक्षक प्रदीप शर्मा ने लोगों को योगासनों का प्रायोगिक अभ्यास कराया।

वेदप्रकाश जी शास्त्री सम्मानित

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पंडित वेदप्रकाश शास्त्री को गुगनराम

एजूकेशनल एंड सोशल वेलफेयर सोसायटी, बोहल, भिवानी, हरियाणा द्वारा उनकी पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश दर्पण' पर श्रीमती सरबती देवी गिरधारी सिहाग साहित्य सम्मान से अलंकृत किया गया है। साथ ही वैदिक यज्ञ प्रकाश पुस्तक पर प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए मुक्तकण्ठ से श्लाघा की गई है। इसके लिए शास्त्री जी बधाई के पात्र हैं। हम सभी स्वयं को अत्यन्त गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज सूरसागर, जोधपुर

प्रधान-श्री किशनलाल गहलोत, मंत्री-श्री नरसिंह सोलंकी, कोषाध्यक्ष-श्री नरपतसिंह गहलोत, प्रचार मंत्री-श्री सोमेन्द्र गहलोत का निर्वाचन सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। इन सभी पदाधिकारियों व समस्त कार्यकारिणी को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शुभकामनाएँ।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, भरतपुर के निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुए।

प्रधान-श्री गिरिराज प्रसाद शर्मा, मंत्री-श्री बलवीर सिंह, कोषाध्यक्ष-श्री सत्यदेव आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान-श्री रामसिंह वर्मा। इन सभी पदाधिकारियों व समस्त कार्यकारिणी को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शुभकामनाएँ।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर

संसार को देने के लिए और मानव मात्र के कल्याण के लिए जो विचार आर्य समाज ने दिए वे अद्वितीय हैं। इसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने दलितों के उत्थान,नारीशक्ति के जागरण और वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। यह उद्बोधन आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित स्वतंत्रता सैनानी स्वामी कर्मवेश जी ने दिया। इस अवसर पर आचार्य शिवकुमार शास्त्री, डॉ. वसन्त कुमार(अकोला), उदयशंकर व्यास, डॉ. मंजू गुप्ता ने भी नव संवत्सर पर अपने विचार व्यक्त किए।

- महेश सोनी, मंत्री

सत्यार्थ सौरभ की एक वर्ष की सदस्यता पूर्णतः निःशुल्क

सत्यार्थ प्रकाश पहेली को हल कीजिए

- सत्यार्थ प्रकाश पहेली प्रतियोगिता के संदर्भ में-

न्यास का इस उपक्रम का यही उद्देश्य है कि इसके माध्यम से नये हाथों में सत्यार्थ सौरभ पत्रिका पहुँचे और वैदिक संस्कृति का प्रचार और प्रसार इस माध्यम से हो सके। लोग पहेली के हल हेतु सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय में प्रवृत्त हों। स्पष्टीकरण के लिए प्रतियोगिता के निर्धारित नियमों का संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है:-

१. हर पहेली पर, उसका उत्तर इस कार्यालय में कब तक प्राप्त हो, यह तिथि अंकित रहती है। उसके पश्चात् प्राप्त होने वाली प्रविष्टियाँ मान्य नहीं होंगी।
२. न्यास में निर्धारित अवधि में प्राप्त सही प्रविष्टियों में से १० को लॉटरी द्वारा चयनित कर पुरस्कृत किया जावेगा।
३. नये हाथों में पत्रिका पहुँचे इस उद्देश्य से एक परिवार के एक ही सदस्य को पुरस्कृत किया जायेगा।
४. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति को दुबारा पुरस्कार नहीं मिल सकेगा।
५. जिन व्यक्तियों को पुरस्कार स्वरूप सत्यार्थ सौरभ की एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क प्राप्त हुई है। अगर वे पहले से ही सदस्य हैं तो पुरस्कार के विजेता के रूप में सत्यार्थ सौरभ में अपना नाम पढ़ते ही अन्य किसी ऐसे व्यक्ति का नाम व पूरा पता हमें भेजें जिन्हें वे उपहार स्वरूप एक वर्ष तक यह पत्रिका भिजवाना चाहते हैं।
६. जो लोग पूर्व में सदस्य नहीं हैं उनसे आशा की जाती है कि एक वर्ष तक निःशुल्क प्राप्त होने वाली पत्रिका को भली-भाँति पढ़कर आप सत्यार्थ सौरभ की सदस्यता आगामी वर्ष से ग्रहण करें ताकि पत्रिका की सदस्यता संख्या में वृद्धि हो सके।
७. यह भी निवेदन है कि पहेली के फोटो स्टेट करवाकर अपने परिचय क्षेत्र में अधिकाधिक लोगों को प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु प्रेरित करें क्योंकि अन्ततोगत्वा इस उपक्रम का उद्देश्य यही है कि प्रतिभागियों की संख्या बढ़ती जाये और प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने हेतु वे सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करें। श्री महेश सोनी, बीकानेर सत्यार्थ प्रकाश पहेली की फोटो स्टेट करवाकर अनेकों को प्रेरित कर रहें हैं। अगर अन्य भी ऐसा प्रयास करें तो सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय की लड़ी बन जावेगी।

आप सभी जानते हैं कि सत्यार्थ सौरभ के माध्यम से अनेक नये और अनूठे प्रकल्पों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार हमारा मुख्य उद्देश्य रहता है। पर इसका विस्तार आपके सहयोग के बिना नहीं हो सकता। अतएव सर्व प्रकार के सहयोग के लिए प्रार्थना है।

- भवानीदास आर्य, प्रबन्ध सम्पादक

हलचल

विधवा महिलाएँ पुजारी बनीं

कर्नाटक में एक मंदिर ने दो विधवा महिलाओं को उपेक्षापूर्ण जीवन से निकाल कर उन्हें मंदिर का पुजारी बनाया है। इससे न केवल

उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा मिली है बल्कि, जीवन-यापन का एक सहारा भी मिल गया है। यह मंदिर मंगलूर जिले के कुडरोली में है। 'गोकर्णनाथेश्वर' के नाम से प्रसिद्ध यह मंदिर दो लाख वर्ग फीट क्षेत्र में बना हुआ है। कुछ दिनों पूर्व मंदिर के मुख्य पुजारी ने ६५ वर्षीय लक्ष्मी शांति तथा ४५ वर्ष की इंदिरा शांति को पुजारी नियुक्त किया है। किसी मंदिर में विधवाओं को पुजारी रखने का यह देश का पहला ही उदाहरण है

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - २ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं। - श्रीमती सुमन सूद, कण्डाघाट, श्री उदय शंकर व्यास, बीकानेर, श्री धर्मवीर आसेरी, बीकानेर, श्री रमेश कुमार, बिहार, श्रीमती शकुन्तला खुराना, बीकानेर, श्रीमती सरस्वती स्वामी, बीकानेर, पुष्पा हरिप्रकाश सोनी, बीकानेर, मनोहरी दाऊजी, बीकानेर, श्रीमती शशी वर्मा, बीकानेर, श्री अजीत सिंह डागर, हरियाणा। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका नि:शुल्क भेजी जावेगी।

२० जुलाई २०१४ को
आयावर्त चित्रदीर्घा लोकार्पण समारोह
एवं
पूज्य स्वामी तत्वबोध सरस्वती स्मृति दिवस
- समारोह के मुख्य आकर्षण -

- न्यास अध्यक्ष पूज्य महाशय धर्मपाल जी
- माननीय सज्जन सिंह जी कोठारी, लोकायुक्त (राजस्थान)
- पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सांसद (सीकर)

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २०१४
के अवसर पर
भव्य भजनोपदेशक सम्मेलन
११-१२ अक्टूबर

प्रतिस्वर

सत्यार्थ सौरभ पत्रिका का जनवरी २०१४ में सदस्य बना। पत्रिका को देखने पढ़ने से इसकी गुणवत्ता बेहद पसन्द आयी। माह जनवरी २०१४ के अंक में प्रकाशित लेख 'मेकिंग ऑफ आसाराम' तथा फरवरी २०१४ के अंक में 'हर हर महादेव' के साथ पुजारियों की चाँदी कितने बढ़िया चिन्तनीय तथा सामयिक लगे कि इनकी फोटो कॉपियाँ करवा आर्य समाज निम्बाहेड़ा के साप्ताहिक सत्संग में वितरित कराई गईं।

- मोहनलाल आर्यपुष्प, निम्बाहेड़ा

बड़ी ही प्रसन्नता का विषय है कि आर्य जगत् के नक्षत्र स्वतंत्रता सैनानी पंडित डॉ. पन्ना लाल पीयूष (भजनोपदेशक) की पौत्री तथा न्यास के सक्रिय सहयोगी सुधाकर पीयूष जी की पुत्री सौ. का. ऋचा का शुभ विवाह चि. मनीष के साथ सम्पन्न हुआ। वर वधू के उज्ज्वल, मंगलमय जीवन हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हैं। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से 'पीयूष' परिवार को हार्दिक बधाई।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमल सूद, पाण्डाघाट, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी

सत्यानाश की जड़- टी.वी. चैनलों की भीड़

श्यामलाल कौशल

भारत में टीवी का प्रचलन लगभग १९६० से हुआ। टीवी का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन, जानकारी बढ़ाना, शिक्षा, समाज तथा धर्म में व्याप्त दोषों को दूर करना है। शुरू-शुरू में टीवी या दूरदर्शन सरकारी नियंत्रण में था। मनोरंजन के नाम पर चित्रहार, फिल्में तथा नाटक दिखाये जाते थे तथा समाचारों द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारी दी जाती थी। अभी टीवी पर विज्ञापन दिखाए जाने का रिवाज शुरू नहीं हुआ था। दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों को दिखाते समय शालीनता, गरिमा तथा मर्यादा का ध्यान जरूर रखा जाता था। दूरदर्शन पर एक निश्चित समय के लिए ही कार्यक्रम प्रसारित किए जाते थे। आजकल की तरह टीवी २४X७ नहीं चलता रहता था। उन दिनों परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे मिल बैठकर रामायण, महाभारत, हम लोग, नुक्कड़ आदि शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक तथा मनोरंजक कार्यक्रम देखा करते थे जिन्हें आज भी बार-बार देखने को दिल करता है। लेकिन आज टी.वी. के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन आ गए हैं। टी.वी. के आज १००,१०० चैनल हैं, जो रात दिन बेतुके उद्देश्यहीन, अश्लील, उबाऊ तथा अनावश्यक तौर पर लम्बे कार्यक्रम दिखाते रहते हैं। इन टी.वी. चैनलों का उद्देश्य मनोरंजन, ज्ञानवृद्धि तथा शिक्षा प्रदान करना बिल्कुल नहीं बल्कि भौंडे, द्विअर्थी तथा अश्लील विज्ञापनों द्वारा दर्शकों को बेवकूफ बनाकर अरबों रुपये कमाने के अलावा और कुछ भी नहीं। विभिन्न कार्यक्रमों तथा टी.वी. सीरियलों को इस प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है कि दर्शकों की उत्सुकता बनी रहे तथा वे और आगे का भाग जानने के लिए बेचैन हो जायें। इस बीच वे विज्ञापनों द्वारा अरबों रुपया कमा लेते हैं। आज विभिन्न टी.वी. चैनल हिंसा, बलात्कार, फिरौती, हत्या, महिलाओं के प्रति हिंसा तथा बुजुर्गों के प्रति अवमानना, तिरस्कार, अवज्ञा तथा अवहेलना का ही पाठ पढ़ा रहे हैं। कार्यक्रम इतने भद्दे, भौंडे तथा अश्लील होते हैं कि परिवार के बड़े-बूढ़े व अन्य सदस्यों के लिए इन्हें इकट्ठे बैठकर देखना शर्म से डूब मरने वाली बात बनती जा रही है। इन कार्यक्रमों में आलीशान भवन, ज्वैलरी, महँगे तथा फैशनेबल कपड़े, लम्बी आयातित गाड़ियों तथा ऐश्वर्य पूर्ण जीवन को इस तरह दिखाया जाता है कि दर्शकों पर इसका इस तरह बुरा प्रभाव पड़ता है कि इस मुकाम पर पहुँचने के लिए वे चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार आदि तरीके इस्तेमाल करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इन टी.वी. कार्यक्रमों को लगातार देखते रहने से दर्शक आलसी हो जाते हैं तथा अगर इस बीच कोई नजदीकी अतिथि भी उनके घर आ जाये उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। उनका सामाजिक जीवन लगभग समाप्त हो जाता है। लागतार टी.वी. देखने से आँखों की दृष्टि भी खराब हो जाती है। टीवी कार्यक्रमों में उलझे हुए बच्चे आमतौर पर अपने स्कूल के होमवर्क में पिछड़ जाते हैं, मित्रों के साथ खेल न सकने के कारण वे ताजी हवा से वंचित रह जाते हैं तथा उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता। आजकल विभिन्न टी.वी. चैनल विभन्न रियाल्टी शो दिखा रहे हैं जो वास्तविकता के बिल्कुल पास नहीं हैं। इसके अलावा विभिन्न चैनल सनसनी, आतंक तथा भय पैदा

करने वाले कार्यक्रम इस प्रकार दिखाते हैं जैसे कि अपराधियों को प्रशिक्षण दे रहे हों। ये टी.वी. चैनल्स जादू-टोना आदि आधारहीन बातों को भी बढ़ावा देते रहते हैं। आतंकवादियों से संबंधित खबरें इस तरह पेश की जाती हैं जैसे कि वारदात के बाद उनका प्रचार किया जा रहा हो। सुबह सबेरे उठते ही विभिन्न टी.वी. चैनल राशि फल के बारे में इस तरह बताना शुरू कर देते हैं कि साधारण सूझ बूझ वाला आदमी भी विभिन्न प्रकार के आडम्बरों में फँस जाये। इसके अलावा आजकल रात दिन टी.वी. पर विभन्न देशों में खेले जाने वाले क्रिकेट मैचों का प्रसारण होता रहता है जो कि सट्टेबाजी को बढ़ावा देता है। बेशक विभिन्न सरकारें सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक दोषों के लिए टी.वी. को ही जिम्मेदार ठहराती हैं लेकिन इसके बावजूद भी यह बात समझ में नहीं आती कि सरकार अश्लीलता, अनैतिकता तथा मर्यादाहीनता फैलाने वाले कार्यक्रमों पर प्रतिबंध क्यों नहीं लगाती? आज समाज टी. वी. द्वारा प्रस्तुत गंदे कार्यक्रमों के प्रभाव के फलस्वरूप दोराहे पर खड़ा है। भारतीय संस्कृति, परम्परा तथा सभ्यता को टी.वी. चैनलों से भारी खतरा है। टीवी कार्यक्रमों के प्रभाव के फलस्वरूप बच्चे बिगड़ रहे हैं, बड़े पथ-भ्रष्ट हो रहे हैं, महिलाओं को भौंडे तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है तथा उनसे संबंधित अपराध बढ़ रहे हैं, पति-पत्नी, सास-बहू, बाप-बेटे, भाई-भाई तथा भाई-बहन में संबंध बिगड़ रहे हैं, नैतिक पतन हो रहा है। ऐसे में क्या फायदा है ऐसे टीवी कार्यक्रमों का? सरकार को चाहिए कि टी.वी. चैनलों के लिए ऐसे नियम बनाये तथा कड़ाई से लागू करे कि टी.वी. कार्यक्रम भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के अनुकूल हों, कार्यक्रम शिक्षाप्रद, मनोरंजक तथा उद्देश्यपूर्ण हों।

मकान नं. ९७५-बी/२०,
राजीव निवास, शक्ति नगर, ग्रीन रोड
रोहतक १२४००१

सत्यार्थप्रकाश पहेली-५

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

	१	त्य			२	अ			३	क्र
	वि	४		५	म्			६	६	ग्नि
७	श्व		८ हि		८ पय			९ ई	९	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जिसका विनाश कभी न हो, इससे उस ईश्वर की यह संज्ञा है।
२. जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का यह नाम है।
३. जो अत्यन्त पवित्र और जिसके साथ से जीव भी पवित्र हो जाता है, इसलिये ईश्वर का यह नाम है।
४. चर और अचर रूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का यह नाम है।
५. रक्षा करने से ईश्वर का यह नाम है।
६. प्रलय में सब का काल और काल का भी काल है, इसलिये परमेश्वर का यह नाम है।
७. जिसमें आकाशादि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं, अथवा जो इन में व्याप्त होके प्रविष्ट हो रहा है इसलिये उस परमेश्वर का यह नाम है।
८. जिसमें सूर्यादि तेज वाले लोक उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं अथवा जो सूर्यादि तेजः स्वरूप पदार्थों का गर्भ नाम उत्पत्ति' और निवास स्थान है, इससे उस परमेश्वर का यह नाम है।
९. जिसका सत्य विचार-शील-ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का यह नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०१४

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

१. ज्ञान सेव के फल में निहित था।
२. ईश्वर ने ज्ञान का फल खाने से मनुष्य (आदम व हव्वा) को निषेध किया।
३. सर्प रूपी शैतान ने आदम व हव्वा को ज्ञान प्राप्ति की प्रेरणा दी व उपाय बताया।
४. ज्ञान प्राप्ति के दण्ड स्वरूप मनुष्य को अदन के बाग से निष्कासित कर दिया गया।

परमेश्वर अपनी अखिल वेद-विद्या का उपदेश जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है।

सत्यार्थप्रकाश
सप्तम सम्मुल्लास

स्वर्णस्थ स्वयंवर

महर्षि दयानन्द ने स्वयंवर विवाह का समर्थन किया है। सत्यार्थ प्रकाश में यह प्रश्न उठाकर कि विवाह करना माता-पिता के अधीन होना चाहिए या लड़का-लड़की के अधीन रहे, महर्षि ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया है- ''लड़का-लड़की के अधीन विवाह होना उत्तम है। जो माता-पिता विवाह करना कभी विचारें, तो भी लड़का-लड़की की प्रसन्नता के विना न होना चाहिए, क्योंकि एक-दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता और सन्तान उत्तम होते हैं। अप्रसन्नता के विवाह में नित्य क्लेश ही रहता है। विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है, माता-पिता का नही। क्योंकि जो उनमें परस्पर प्रसन्नता रहे तो उन्हीं को सुख और विरोध में उन्हीं को दुःख होता।''(सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्मलास)

इसी प्रसंग में महर्षि आगे चलकर लिखते हैं ''जैसी स्वयंवर की रीति आर्यावर्त्त में परम्परा से चली आती है, वही विवाह उत्तम है। जब स्त्री-पुरुष विवाह करना चाहें, तब विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर का परिमाणादि यथायोग्य होना चाहिये। जब तक इनका मेल नहीं होता, तब तक विवाह में कुछ भी सुख नहीं होता और न बाल्यावस्था में विवाह करने से सुख होता।'' (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्मलास)

स्वामी जी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के 'गृहस्थाश्रम विषय' के अन्तर्गत, यजुर्वेद ३/४१ मंत्र- ''गृहा मा विभीत''- के भाष्य में लिखते हैं- ''हे गृहाश्रम की इच्छा करने वाले मनुष्य लोगो! तुम लोग स्वयंवर अर्थात् अपनी इच्छा के अनुकूल विवाह करके गृहाश्रम को प्राप्त हो, और उससे डरो व कंपो मत।

स्वामी दयानन्द स्वयंवर विवाह के संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्मलास में लिखते हैं- ''जब तक इसी प्रकार सब ऋषि-मुनि, राजा-महाराजा, आर्य लोग ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़ ही के स्वयंवर विवाह करते थे, तब तक इस देश की सदा उन्नति होती थी। जब से यह ब्रह्मचर्य से विद्या का न पढ़ना, बाल्यावस्था में पराधीन अर्थात् माता-पिता के आधीन विवाह होने लगा, तब से क्रमशः आर्यावर्त्त देश की हानि होती चली आई है। इससे इस दुष्ट काम को छोड़ के सज्जन लोग पूर्वोक्त प्रकार से स्वयंवर विवाह किया करें।''

स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वयंवर रीति से विवाह का इतना अधिक महत्व समझते हैं कि अपने वेद भाष्य में मंत्रों के भावार्थ में अनेक स्थलों पर इसका उल्लेख किया है। यथा- ''जो वधू और वर स्वयंवर विवाह से परस्पर प्रसन्न होकर विवाह करते हैं, वे सूर्य और उषा के समान गृहाश्रम को उत्तम आचार से अच्छे प्रकार प्रकाशित कर सर्वदा आनन्दित होते हैं।'' - ऋग्वेद भाष्य

समान गुण कर्म स्वभाव (अर्थात् स्ववर्ण) के स्त्री पुरुष में ही विवाह होना चाहिए-

आजकल विवाह का आधार जन्मगत जाति के अनुसार होता है। अर्थात् विवाह में सामाजिक नियम यह बना दिया गया है कि जो जन्म से जिस जाति में जन्मा है उसका विवाह उसी जाति में जन्मी कन्या से होगा, चाहे उनके गुण, कर्म, स्वभाव विपरीत ही क्यों न हों। यह व्यवस्था गृहस्थ में क्लेश उत्पन्न होने का प्रमुख कारण बन चुकी है। क्योंकि विवाह में लड़के व लड़की के गुण कर्म स्वभाव में समानता आवश्यक है चाहे उनका जन्म किसी भी जाति में क्यों न हुआ हो। वस्तुतः महाभारत काल तक जन्मगत जाति प्रथा थी ही नहीं। यह प्रथा अवैदिक व समाज के लिए अत्यन्त हानिकारक है। समाज के वर्गीकरण की वैदिक व्यवस्था तो गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था है। यह योग्यता मूलक व्यवस्था है। जो बुद्धिप्रधान वर्ग है तथा तत्संबंधी कार्यों यथा अध्ययन-अध्यापन आदि में जिनकी रुचि है वे ब्राह्मण कहलाऐंगे, जो बल प्रधान वर्ग है तथा तत्संबधी कार्यों यथा पुलिस सेवा, सैन्य सेवा आदि में जिनकी रुचि है वे क्षत्रिय कहलाऐंगे, जो अर्थ प्रधान स्वभाव रखते हैं तथा तत्संबधी कार्यों यथा कृषि, व्यापार आदि में

रुचि रखते हैं वे वैश्य कहलाऐंगे व शेष शूद्र होंगे (जो प्रयत्न करने पर भी उपरोक्त किन्ही भी योग्यताओं का संपादन नही कर पाते)। स्पष्ट है कि वर्ण का सम्बन्ध योग्यता व रुचि से है। जब एक ही वर्ण के पुरुष-स्त्री आपस में विवाह करेंगे तो समान गुण, कर्म, स्वभाव व रुचि के होने से उनके सोचने व कार्य करने में समानता होगी। इस प्रकार उनमें विवाद की संभावना कम होगी। इन वर्णों का निर्धारण विद्या पूर्ण करने पर परीक्षा ली जाकर आचार्य द्वारा किया जा सकेगा। वर्णों के लिए निर्धारित योग्यता व कार्यों से विरत होने पर वर्ण परिवर्तन हो जावेगा। महर्षि लिखते हैं-

धर्मचर्य्यया जघन्यो वर्णः पूर्व पूर्व वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ। अधर्मचर्य्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ॥ -आपस्तम्ब २/५/११/१०-११

'धर्माचरण से, निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम-उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण में गिना जावे कि जिस-जिस के योग्य होवे। वैसे अधर्माचरण से पूर्व अर्थात् उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे-नीचे वर्ण को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे।'

स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश में आगे लिखते हैं- ''यह गुण कर्मों से वर्णों की व्यवस्था कन्याओं की सोलहवें वर्ष और पुरुषों की पच्चीसवें वर्ष की परीक्षा में नियत करनी चाहिये और इसी क्रम से अर्थात् ब्राह्मण वर्ण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय वर्ण का क्षत्रिया, वैश्यवर्ण का वैश्या और शूद्र वर्ण का शूद्रा के साथ विवाह होना चाहिये। तभी अपने-अपने वर्णों के कर्म और परस्पर प्रीति भी यथायोग्य होगी''। -स.प्र. ४ समुल्लास

अभिप्राय यह कि ब्राह्मण स्वभाव की कन्या का पति अन्य किसी गुण में बड़ा हो या न हो, विद्या तथा विद्या-व्यसन में अवश्य बड़ा होना चाहिये। क्षत्रिय स्वभाव की कन्या का पति 'आन का धनी' होना ही चाहिये। वैश्य स्वभाव की कन्या कंजूस पति की पूजा नहीं कर सकती है। अतः उसका पति 'धन का धनी' होना आवश्यक है। इस प्रकार गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार ज्ञान, आन और दान के आधार पर क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य की कन्याओं का विवाह होना चाहिये, तभी गृहस्थ जीवन सुखमय हो सकता है।

विवाह में गुण-कर्म-स्वभाव की समानता के संदर्भ में मनु को उद्धृत करके महर्षि लिखते हैं-

गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि।
उद्वहेत द्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्॥ - मनु. ३/४

अर्थात् गुरु की आज्ञा से स्नान कर, गुरुकुल से अनुक्रमपूर्वक आ के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने वर्णानुकूल सुन्दरलक्षणयुक्त कन्या से विवाह करें।

इसका हेतु यह है कि यदि माता-पिता के गुण-कर्म-स्वभाव में समानता होगी तो उनसे श्रेष्ठ गुण सम्पन्न सन्तान होगी। पति-पत्नी के गुण-कर्म-स्वभाव में सादृश्य विवाह की सफलता के लिए आवश्यक है। वे मनु को उद्धृत कर लिखते हैं कि-

काममामरणातिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि।
न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित्॥ - मनु. ६/८६

चाहे लड़का-लड़की मरण पर्यन्त कुमारे रहें, परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण-कर्म-स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए।

उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च।
अप्राप्तामपि तां तस्मै कन्यां दद्याद्यथाविधि॥ - मनु. ६/८८

महर्षि का पति-पत्नी के गुण-कर्म-स्वभाव में सादृश्य के प्रति इतना अधिक आग्रह था कि वे संस्कार विधि में उक्त श्लोक को उद्धृत कर कहते हैं- अर्थात् यदि माता-पिता कन्या का विवाह करना चाहें तो अति उत्कृष्ट शुभगुण-कर्म-स्वभाव वाला, कन्या के सदृश रूपलावण्यादि गुणयुक्त वर ही को चाहें वह कन्या माता की छह पीढ़ी के भीतर भी हो, तथापि उसी को कन्या देना, अन्य को कभी न देना कि जिससे दोनों अति प्रसन्न होकर गृहाश्रम की उन्नति और उत्तम संतानों की उत्पत्ति करें। इस सदृश गुण-कर्म-स्वभाव वाले वर को पाने के लिए वे मनु. ३/५ में निर्दिष्ट असपिण्डता संबंधी नियम को तोड़ने के लिए तैयार हैं।

(सत्यार्थ-भास्कर-स्वा. विद्यानंद सरस्वती)

काश! आज राष्ट्र में स्वामी दयानन्द के मतानुसार जाति व्यवस्था के स्थान पर वर्ण व्यवस्था निर्धारित रहती तो समाज में जो दहेज प्रथा, सती प्रथा, देवदासी प्रथा एवं तलाक आदि की समस्याएँ हैं वह न रहतीं। गुणकर्मानुसार स्ववर्णस्थ विवाह होने से सभी वर्णों के लोग अपने पसंद का जीवन साथी गृहाश्रम के लिए चयन कर सकते। कम से कम महर्षि दयानन्द के अनुयायियों को उनके ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर व्यावहारिक जीवन में गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था का पालन करते हुए गृहस्थाश्रम में वैदिक स्वर्ग की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयत्नशील रहना ही चाहिये।

- संपादक- अशोक आर्य

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को संबल प्रदान करने हेतु भाई डॉ. एस.के. माहेश्वरी ने संरक्षक सदस्यता ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

आज ही क्यों नहीं? कथा सरित

एक बार की बात है कि एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर-सम्मान किया करता था। गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरूजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन-संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पाता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली। एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा- 'मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा, दो दिन के लिए देकर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात् मैं इसे तुमसे वापस ले लूँगा।'

शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते-करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर-चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रातःकाल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरुजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ जरूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाजार से लोहे के बड़े-बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा। दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा कि अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाजार जाकर सामान लेता आएगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात् ही सामान लेने निकलूंगा पर भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी और उसने थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नीद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था।

अब वह जल्दी-जल्दी बाजार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरुजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरुजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर-चूर हो गया। पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी। उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा।

मित्रों! जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं , पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवाँ देते हैं। इसलिए यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान् बनना चाहते हैं तो आलस्य और दीर्घसूत्रता को त्यागकर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम,और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिये -

'आज ही क्यों नहीं ?'

प्रेषक- डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर

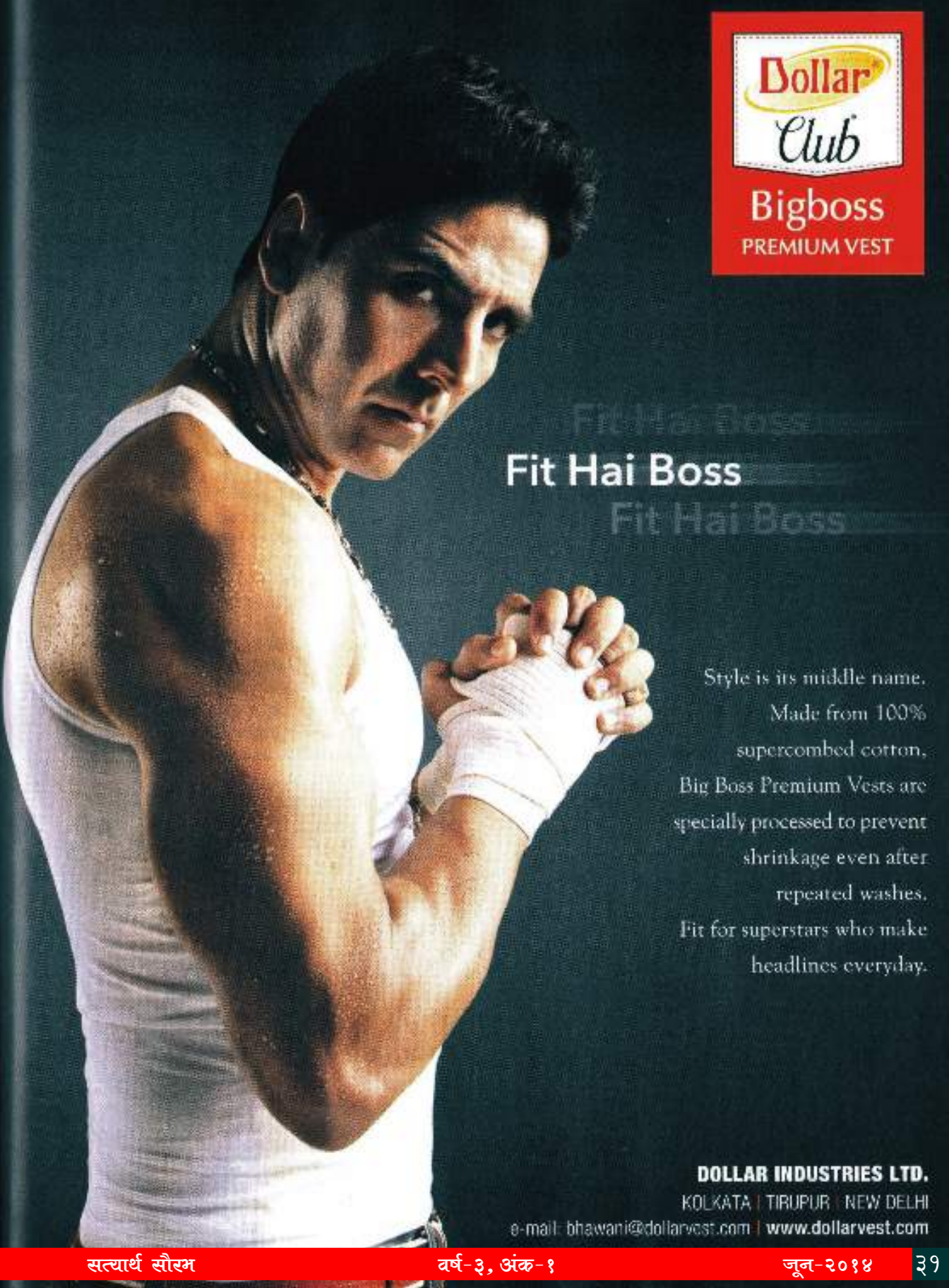

Dollar Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Style is its middle name.
Made from 100%
supercombed cotton,
Big Boss Premium Vests are
specially processed to prevent
shrinkage even after
repeated washes.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com | www.dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 June-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

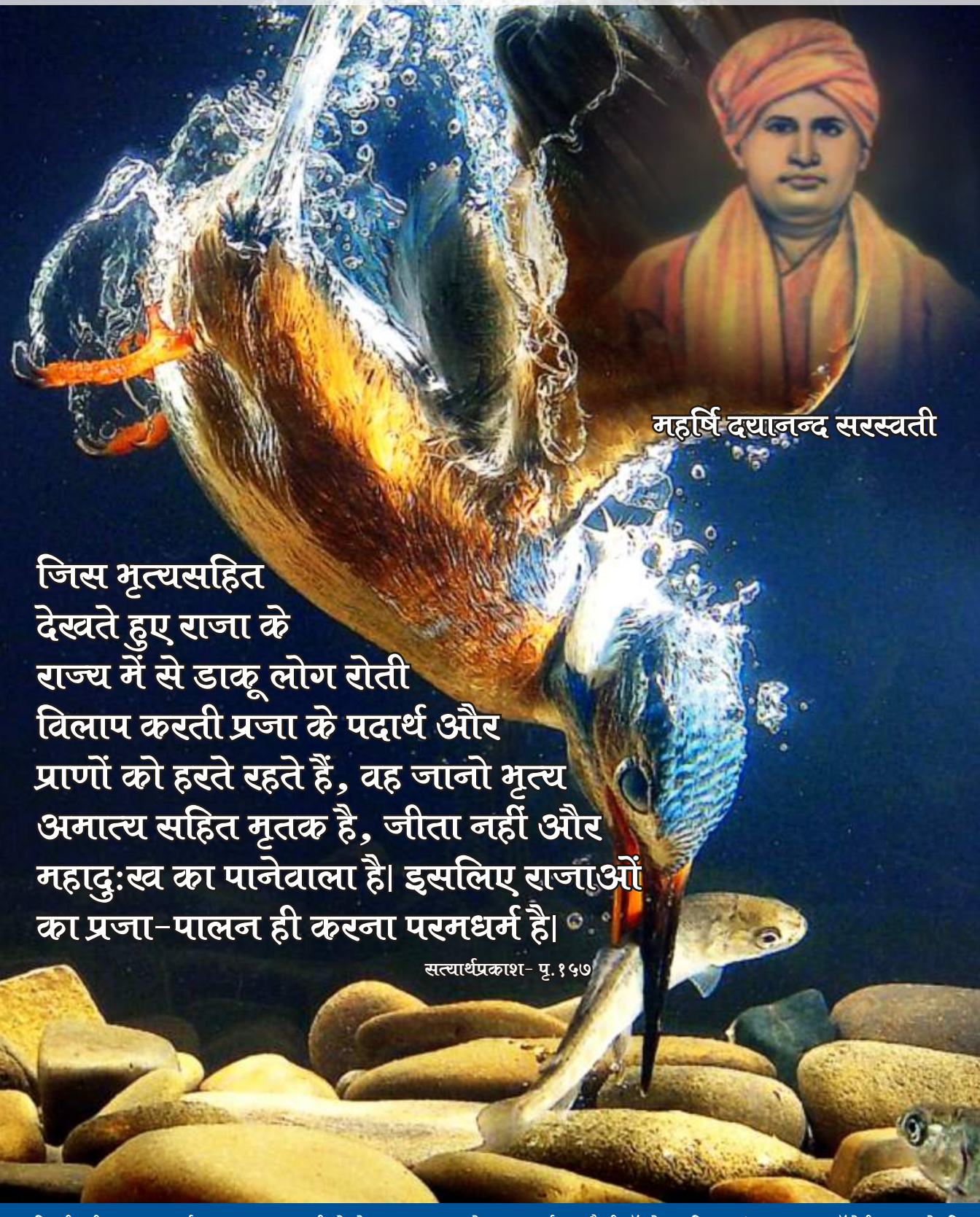

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जिस भृत्यसहित देखते हुए राजा के राज्य में से डाकू लोग रोती विलाप करती प्रजा के पदार्थ और प्राणों को हरते रहते हैं, वह जानो भृत्य अमात्य सहित मृतक है, जीता नहीं और महादुःख का पानेवाला है। इसलिए राजाओं का प्रजा-पालन ही करना परमधर्म है।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. १५७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., ११/१२ गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-३१३००१ से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य